ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह - ज्येष्ठ-श्रावण, संवत् 2077
जून-जुलाई 2020 (संयुक्तांक)

अंक 175, मूल्य 10

# अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

प्रवेश प्रारम्भ

॥ ओ३म् ॥

प्रवेश प्रारम्भ

॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥

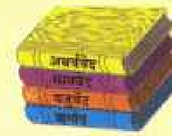

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

# तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा

गोहड़ीडिपा, व्हाया-राजपुर, तह. लैलूंगा,
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

## शिक्षा सत्र : 2020-21

# प्रवेश प्रारम्भ

## कक्षा 6वीं से 12वीं

बन्धुओं !

वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए नारी शिक्षा को बढ़ावा देते हुए बेटी पढ़ेगी, भविष्य गढ़ेगी। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ को चरितार्थ करते हुए छत्तीसगढ़ में एक मात्र कन्या गुरुकुल आश्रम।

## *हमारा संकल्प :-*

1. शिक्षा के साथ संस्कार।
2. बौद्धिक विकास के साथ नैतिक विकास।
3. पूर्णतया निःशुल्क शिक्षा।
4. आवास, भोजन, छादन, वस्त्र (ड्रेस) साबुन तेलादि की निःशुल्क व्यवस्था।
5. वैदिक संस्कार यथा प्रतिदिन संध्या हवन करना।
6. कन्याओं के स्तरानुसार दक्षता को लक्ष्य बनाकर अध्यापन की योजना।
7. बालिकाओं का शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक विकास को ध्यान में रखते हुए योग, आसन, व्यायाम, प्राणायाम, आत्मरक्षार्थ, जूडो-कराटे सिखाने की व्यवस्था।
8. आश्रम में खेल को भी प्रोत्साहन दिया जाता है व खेलने हेतु सामान, खेल मैदान उपलब्ध।
9. बालिकाओं को आत्म निर्भर बनाने का प्रयास करना एवंसुरक्षा व्यवस्था।
10. सभी बालिकाओं को समान भोजन, छादन, रहन-सहन की उचित व्यवस्था।

*सभी अभिभावकों से निवेदन है कि अपने होनहार बालिकाओं को प्रवेश देकर पुण्य के भागी बनें।*

**संपर्क : 9981671267, 9009639510, 7509726864**

वर्ष - १५, अंक १० (संयुक्तांक) ओ३म् मास/सन् -जून+जुलाई २०२०

11/8/20

# अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका


विक्रमी संवत् - २०७७

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२१

दयानन्दाब्द - १९८

: प्रधान सम्पादक :

**आचार्य अंशुदेव आर्य**

प्रधान सभा

(मो. ७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :

**आर्य दीनानाथ वर्मा**

मंत्री सभा

(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :

**श्री चतुर्भुज कुमार आर्य**

कोषाध्यक्ष सभा

(मो. 6260908636)

★

: सम्पादक :

**आचार्य कर्मवीर**

मो. ८१०३१९८४२४

प्रबंधक : कृष्ण कुमार गुप्ता

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१

फोन : (०७८८) ४०३०९७२

फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-


श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

## विषय - सूची


| | | | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|---|
| १. | अविवेकी जन डूब जाते हैं | स्व. रामनाथ वेदालंकार | ०४ |
| २. | आखिर तनाव को कैसे कहें - अलविदा | आचार्य कर्मवीर | ०५ |
| ३. | कोरोना महामारी पर विजय सहित वेद व धर्म की रक्षा पर विचार | मनमोहन कुमार आर्य | ०८ |
| ४. | देश सर्वोपरि होता है | अखिलेश आर्येन्दु | ११ |
| ५. | कर्मफल के कुछ प्रमुख पहलुओं पर विचार | खुशहालचन्द्र आर्य | १५ |
| ६. | समस्त दुःखों का कारण धर्म ? | विनायकराव विद्यालंकार | १७ |
| ७. | बच्चों, बेसहारा लोगों की अनदेखी | हर्षमंदर | २० |
| ८. | छत्तीसगढ़ के भामाशाह-तुलाराम परगनिहा | दीनानाथ वर्मा | २२ |
| ९. | देशभक्तों के सरताज : पं. रामप्रसाद बिस्मिल | ऋषि कुमार आर्य | २५ |
| १०. | वीरता की देवी : रानी लक्ष्मीबाई | डॉ. अशोक आर्य | २७ |
| ११. | भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक व समाज सुधारक- बालगंगाधर तिलक | अनिल आर्य | २८ |
| १२. | मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम | अजीत कुमार आर्य | २९ |
| १३. | होमियोपैथी से मधुमेह (शुगर) का इलाज | डॉ. उत्कर्ष त्रिवेदी | ३१ |
| १४. | समाचार प्रवाह | | ३३ |



सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत

(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com


लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

# अविवेकी जन डूब जाते हैं

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अभि वेना अनूषत, इयक्षन्ति प्रचेतसः।
मज्जन्त्यविचेसः ॥ ऋग्. ९.६४.२१

ऋषिः काश्यपः । देवता पवमानः सोमः । छन्दः गायत्री ।

● (वेनाः) प्रभु-प्रेमी मेधावी जन, (अभि अनूषत) अभिमुख होकर (पवमान सोम प्रभु की) स्तुति करते हैं। (प्रचेतसः) प्रकृष्ट चित्तवाले विवेकी जन (इयक्षन्ति) यज्ञ करने का संकल्प करते हैं। (अविचेसः) अविवेकी जन (मज्जन्ति) डूब जाते है।

सोम प्रभु पवमान है, जग को पवित्र करने वाले हैं। जो मलिनता संसारमें कई कारणों से उत्पन्न होती है, उसे विविध साधनों से पवित्र करनेवाले सोम प्रभु यदि न होते तो मलिनता इतनी बढ़ जाती है कि प्राणियों का जीवित रहना कठिन हो जाता। वे मानव के हृदय को भी पवित्र करने वाले हैं, परन्तु उन्हीं के हृदय को पवित्र कर सकते है जो अपना हृदय पवित्र होने के लिये उन्हें देते हैं। प्रभु-प्रेमी मेधावी जन सोम प्रभु के अभिमुख हो उनके प्रति प्रणत होते हैं, उनकी स्तुति करते हैं, उनकी पावनता का गुणगान करते हैं, उन्हें आत्म-समर्पण करते हैं। परिणामतः वे 'प्रचेताः' बन जाते है, उनका चित्त प्रकृष्ट, पवित्र, ज्ञानमय और विवेकयुक्त हो जाता है। प्रचेताः मनुष्य दीर्घद्रष्टा होते है। जिस यज्ञ को अन्य लोग निरर्थक समझते हैं, उन्हीं वही प्यारा होता है। वह अपने जीवन में यज्ञ करने का संकल्प लेते हैं। वे सोम-यज्ञ करते हैं, सोम प्रभु के नाम से यज्ञ में आहुतियाँ डालते हैं, 'सोम' प्रभु का भजन-कीर्तन करते हैं और उससे प्रेरणा पाकर स्वयं भी साक्षात् सोम बन जाते हैं। उनके जीवन में सोम-सदृश रसमयता, मधुरता और पावनता आ जाती है। सोम के आदर्श को अपने सम्मुख रखते हुए वे अन्य यज्ञों का भी आयोजन करते हैं। 'सोम' प्रभु पावनता के यज्ञ को चला रहे हैं, वे भी समाज को पावन करते हैं। 'सोम' प्रभु सृष्टि यज्ञ चला रहे हैं, वे भी सर्जनात्मक कार्यों को करते हैं। 'सोम' प्रभु पालन-पोषण और पूर्ति का यज्ञ कर रहे हैं वे भी निर्बलों का पालन करते हैं, अपुष्टों को पुष्टि देते हैं, अपूर्णों के दोषों को दूर कर उनके छिद्र भरते हैं। यज्ञमयी नौका पर चढ़कर वे भव-सागर से पार हो जाते हैं। परन्तु जो 'अविचेताः' है, अविवेकी है, अल्पदर्शी हैं, वे न 'सोम' प्रभु का स्तवन करते हैं, न यज्ञ करते हैं। परिणामतः वे भव-सागर में डूब जाते हैं और दुर्गति पाते हैं।

*संस्कृतार्थ :- १. वेन मेधावी (निघं ३.१५)। वेन धातु कामनार्थक (निघं २.६)। २. शू स्तुतौ, लङ्। ३. यष्टुमिच्छन्ति। यज, सन्।*

सम्पादकीय

# आखिर तनाव को कैसे कहें-अलविदा

विगत दिनों पिछला (W.H.O.) का विवरण पढ़ रहा था, जिसमें तमाम बिमारियों के कारणों का भयावह चित्र सामने आया, यह जानकर ताज्जुब लगा कि आजकल के अधिकांश रोगों का कारण अव्यवस्थित जीवन शैली प्रदूषित आहार विहार के साथ साथ अवसाद चिन्ता, टेंशन या तनाव भी एक अतिमहत्वपूर्ण कारण है। जब तक इसे दूर करने के बारे में सचेष्ट न हों तब तक इससे निजात पाना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है, आईये जानने का प्रयास करें :-

**आखिर यह तनाव क्या है :**

प्रकृति के समान मनुष्य भी कोमल और कठोर-दोनों प्रकार की भावनाओं का स्वामी है। जब उसकी कोमल भावनाओं को ठेस लगती है, तो वह तिल-मिलाकर झुँझलाने लगता है, दाँत पीसने लगता है, उसकी मुट्ठियाँ जकड़ जाती है, चेहरा भयानक हो जाता है, वह सिर धुनने लगता है। यह तनाव क्षणिक भी हो सकता है और काफी समय तक रहने वाला भी। क्षणिक तनाव से उतनी अधिक हानि नहीं होती, जितनी कि लम्बे समय तक रहने वाले तनाव से। कभी कभी मानसिक तनाव मनुष्य के लिए प्रेरक बनकर उसकी उन्नति के शिखर पर भी पहुँचा देता है। जब दो पहलवान कुश्ती के लिए आपस में भिड़ते हैं, तो उनमें से एक का मानसिक तनाव उसे विजयश्री का अधिकारी बनाकर उसका नाम उज्ज्वल कर देता है।

**तनाव के दुष्परिणाम :**

तनाव की स्थिति में मानसिक सन्तुलन बिगड़ने के कारण मन और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। निराशा जीवन में छा जाती है। दूसरों पर भी विश्वास नहीं रहता। भूख-प्यास प्रायः समाप्त हो जाती है। शरीर में दुर्बलता अनुभव होने लगती है। सिर दर्द, अपच, अनिद्रा तथा रक्तचाप की शिकायत हो जाती है। किसी काम में मन नहीं लगता। आलस्य बढ़ जाता है। शरीर में पित्त की मात्रा बढ़कर

अनेक रोग हो जाते हैं। कभी-कभी वमन भी होने लगता है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। बात-बात में क्रोध आने लगता है। दूसरे को खाता-पीता देखकर उससे ईर्ष्या होने लगती है। स्वयं की ही नहीं, बल्कि आस-पास की भी शान्ति भंग हो जाती है। अपनी गलतियों को दूसरों के सिर मढ़ने की कुटेव पड़ जाती है। मन में एक प्रकार का अज्ञात भय सा छा जाता है। संक्षेप में, यह तनाव तन-मन व प्राणों को जर्जीरित कर देता है।

**तनाव दूर करने के थोथे साधन :**

यह सच है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास है। परिस्थितियों से घिर कर मनुष्य आज के मशीनी युग में स्वयं भी मशीन बनकर रह जाता है। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि मनुष्य अपने हाथ-पैर मारकर या जूझकर परिस्थितियों को नियंत्रित न करें। कुछ लोग तनाव को दूर करने के लिए शराब, सिगरेट, अफीम, गांजा, भांग, ब्राउनशुगर, हेरोइन जैसे न जाने कैसे-कैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। पर इससे तनाव कम होना तो दूर रहा, उलटे ये पदार्थ उनके शरीर को निकम्मा तथा असमर्थ बना देते हैं। शराब पीकर तनाव को कम करने के लिए अनेक लोग अपने परिवार और स्वयं को नष्ट कर चुके हैं। किसी ने लिखा था - **जो बह गए इन बोतलों की पानी में, ओ न फिर उभरे जिन्दगानी में ॥** फेफड़े गलाकर जीवन के सच्चे सुख से हाथ धो बैठे हैं, कैंसर को निमन्त्रण देकर चारपाई पर सड़ते रहे हैं, कभी दिल की धड़कन बढ़ने पर रक्तचाप ने उन पर प्रहार किया है। इसके बदले उनकी पसीने की कमाई हाथ से जाती रही, जिन्दगी लंगड़ी बनकर रह गई है, होश-हवास चले गए हैं, मान-सम्मान चला गया है। यह शराब फिर भी तनाव से छुटकारा न दिला सकी।

सिगरेट पीकर तनाव दूर करने की बात भी कुछ कम अटपटी नहीं है। एक सज्जन पत्नी के मायके जाने पर पहली बार इतने भावुक हो गये कि वियोग में अभिभूत हो तनाव के चंगुल में फंस गए। जिस सिगरेट को पहले कभी उन्होने छुआ भी नहीं था, अब लगातार उसी सिगरेट के दो पैकेट फूंक डाले। रात होते होते उन्हें उल्टियों का ऐसा तांता लगा, जो बड़ी कठिनाई से थम सका। जिसके पीने से उनका तनाव कम होने की अपेक्षा बढ़ गया। इस विषय में पश्चिमी जर्मनी के जुलियस मैक्सीमिलन विश्वविद्यालय में न्यूरोटोलोजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. क्लोस् क्लासेन ने बतलाया है कि **जब कोई व्यक्ति धुएँ का कश अन्दर खींचता है, तब उसे अपने भीतर एक तनाव महसूस होता है और उसी समय धुआँ उसके मस्तिष्क के कोषों को हानि पहुंचाता है। यह कश या धुआँ उसके रक्त के रासायनिक घटकों को प्रभावित करता है। भांग, अफीम, चरस या सुल्फा भी तनाव को दूर करने के ऐसे ही तथाकथित खतरनाक उपाय है।**

**तनाव से मुक्ति के उपाय :**

तनाव को दूर करने के लिए सबसे पहली और आवश्यक बात अपने अन्दर आत्म-विश्वास जगाना है। आत्मविश्वास जाग्रत होने पर जरा-जरा सी बात पर कभी तनाव नहीं होगा और यदि कभी होगा भी तो

वह क्षणिक होगा। निश्चिन्त होकर पूरी नींद लेनी चाहिए। नींद पूरी होने पर शरीर के टूटे-फूटे घटक (सैल्ज) अपनी पहली दशा में आ जाते हैं और शरीर स्वस्थ रहता है। शरीर के स्वस्थ रहने से मन स्वस्थ रहता है। तन-मन के स्वस्थ रहने से तनाव के लिए कोई स्थान नहीं रहता। इसीलिए हमारे शास्त्रों में आहार-निद्रा ब्रह्मचर्य को स्वास्थ्य का आधार स्तम्भ स्वीकारा है, तीनों में से कोई भी स्तम्भ कमजोर हुआ तो स्वास्थ्य का नाश हो जाता है। जीवन की एकरसता को दूर करके जीवन में विविधता को अपनाना चाहिए। स्त्रियाँ घर-गृहस्थी के एकरसीय काम के अलावा अपने मन को तनाव से बचाने के लिए चित्रकारी, पढ़ाई-लिखाई, सिलाई-कढ़ाई अथवा मनोरंजन आदि में लगा सकती है। इसके अतिरिक्त भ्रमण करके बच्चों के साथ खेलकर अथवा अपनी हॉबी को विकसित करके जीवन की एकरसता को दूर कर सकते हैं। अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। खाने में अम्लयुक्त पदार्थ न लें। चिकित्सकों ने मानसिक तनाव से बचने के लिए कैल्शियम तथा प्रोटीन आवश्यक तत्व बतलाएं हैं। अतः खाने में हरी साग-सब्जियाँ, दालें, दूध-दही आदि पौष्टिक, सात्विक, सन्तुलित और शुद्ध पदार्थ ही लेने चाहिए।

आचार-विचार तथा व्यवहार को भी संबल रखना चाहिए। धैर्य, सहन-शीलता, सौहार्द और शुद्ध चरित्र को अपनाकर भी तनाव से सरलता से बचा जा सकता है। उत्तेजक कैबरे, नाच, रंग और तमाशों से भी बचना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के उत्तेजक दृश्य शरीर में ५० प्रतिशत पित्त की वृद्धि करते हैं, जिससे रक्त दूषित हो जाता है। यदि कोई मानसिक श्रम करता है, जैसे - डाक्टरी, वकालत तथा अध्यापन का कार्य आदि, तो ऐसे व्यक्तियों को शारीरिक श्रम भी करना चाहिए। चाहे वह कार्य भ्रमण का हो या अपने घर की फूलवारी की देखभाल का हो। इसी प्रकार शारीरिक श्रम करने वालों को मानसिक परिश्रम की ओर ध्यान देना चाहिए। इससे तनाव तो दूर होगा ही, साथ ही कुछ न कुछ ज्ञान की प्राप्ति भी होगी। क्रोध से बचना चाहिए। यह जीवन का भयंकर शत्रु है। यह बुद्धि कुंठित करता है। इनसे छुटकारा प्राप्त करने पर तनाव पास नहीं फटकने पायेगा। अन्त में यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि तनाव को स्वयं पर कभी भी हावी नहीं होने देना चाहिए, क्योंकि तनाव से जीवन खोखला हो जाता है।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी बात के बारे में अनावश्यक चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हर दशा में हर परिस्थिति में खुशी ढूंढने की कोशिश करनी चाहिए। किसी विचारक ने इस संबंध में बड़ी सुन्दर बात कही थी कि खुशी एक चिड़िया है वह हरदम उड़ती रहती है यदि आपको खुशी चाहिए तो उसे अपनी मुट्ठी में रख लीजिए क्योंकि यह ज्यादा देर न ठहरेगी फिर उड़ जाएगी यही मूल मंत्र है तनाव को भगाने का। फिर देखिये खुशियाँ ही खुशियाँ। आइए! खुश रहना सीखें, इसका सबसे बड़ा फंडा यही है कि हम प्रत्येक परिस्थिति में सकारात्मक सोचें, एक टूटे दांत को लेकर टेंशन पालने के बजाय बचे हुए एकतीस दांतों की खैर मनाएँ, फिर देखे, खुशियाँ हमारी मुट्ठी में।

- आचार्य कर्मवीर

ज्वलन्त मुद्दा

# कोरोना महामारी पर विजय सहित वेद व धर्म की रक्षा पर विचार

- मनमोहन कुमार आर्य

हमारा देश ही नहीं अपितु विश्व के अधिकांश देश इस समय कोरोना वायरस के संक्रमण के संकट से जूझ रहे हैं। हमारे देश का नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सुयोग्य हाथों में है। देश सुरक्षित और कोरोना के संक्रमण से हमें कम हानि हो रही है। यह केवल हमारा मानना नहीं है अपितु यह अनेक विद्वानों व विशेषज्ञों का अनुभव है जो यह बातें टीवी चैनलों पर भी बताते हैं। कोरोना से इस समय हमारे देश के लगभग ७५,०००० से अधिक लोग संक्रमित हैं। यह छूत का रोग है। यह किसी संक्रमित रोगी के सम्पर्क में आने अर्थात् उसे स्पर्श करने व मिलने से होता है। सरकार देश के संक्रमित लोगों की पहचान कर रही है तथा उन्हें अलग-अलग रखकर उनका यथासम्भव उपचार कर रही है। यद्यपि इस रोग का उपचार अभी तक खोजा नहीं जा सका है तथापि हमारे देश में बहुत से रोगी इस जानलेवा संक्रमण से स्वस्थ भी हुए हैं। कुछ लोगों ने सरकार के प्रयासों में सहयोग नहीं किया जिसके इसके कुछ विस्तार की सम्भावना है। पहले दिल्ली आदि के बहुत से श्रमित अपने परिवारों के साथ अपने-अपने गृह प्रदेश को जाने के लिये पैदल ही निकल गये हैं, जिससे इस रोग के प्रसार का भयावह खतरा दिखाई दे रहा था। विगत दिनों का समाचार है कि दिल्ली की निजामुद्दीन दरगाह के समीप के एक इस्लामिक सेन्टर पर दो-तीन हजार लोग एक एकत्र हुए। इसका टीवी चैनलो पर चर्चा चल रही थी। इन लोगों में संक्रमण की जांच हो रही है। अनेक लगो संक्रमित पाये गये हैं। इसमें लगभग २५० से अधिक लोग विदेशी हैं जो यहां अपने मत का प्रचार करने आदि कुछ उद्देश्यों से आये थे। ऐसा भी बताया जा रहा है कि इस संकट के समय लोगों को यहां दिल्ली में एकत्र करने में सरकार के नियमों व निर्देशों की अवहेलना की गई है। सरकारी आदेश से कुछ लोगों के विरुद्ध एफआईआर की जा सकती है। इस प्रकार के कार्य सरकार को इस रोग को दूर करने में बाधक बनने सहित इस रोग के अनेकानेक लोगों में विस्तार के द्योतक हैं। इस कार्य देश के हितों के विरुद्ध हैं। सभी देशभक्त लोगों

को पूरी तरह से देश की केन्द्र व राज्य सरकारों को इस रोग को समाप्त करने में सहयोग देना चाहिये जिससे जानमाल की कम से कम हानि हो तथा देश की अर्थव्यवस्था भी नष्ट होने से बच जाये। हम इस रोग पर विजय प्राप्त करने में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों की सराहना एवं प्रशंसा करते हैं।

कोरोना वायरस व रोग जनवरी २०२० के बाद देश में आया है। इससे पूर्व भी देश में अनेक समस्यायें थीं। वह समस्यायें कोरोना रोग ने दबा दी है। उनकी चर्चा होना ही बन्द हो गया है। हम समझते हैं कि हमें धरातल की सच्चाईयों को दृष्टि से ओझल नहीं करना चाहिये। हमें विचार करना चाहिये कि क्या हमारा प्रिय सनातन वैदिक धर्म पूर्णतः सुरक्षित है ? इसे किसी से कहीं से कोई भय व खतरा तो नहीं है ? इस विषय पर जब विचार करते हैं तो हमें लगता है कि १२ शताब्दी पूर्व हमारे धर्म व संस्कृति पर जो आक्रमण किये गये थे तथा उनसे धर्म की जो क्षति हुई थी वह आज भी यथावत जारी ही नहीं है अपितु पहले से भी अधिक वीभत्स रुप से प्रवृत्तत है। अनेक विधर्मी संगठित होकर हमारे धर्म के विरुद्ध अन्दरखाने साजिशें करते रहते हैं और हम लक्षणों को देखकर उन समस्याओं को दृष्टि से ओझल करते रहते हैं। हमारे बन्धुओं का अतीत में धर्मान्तरण कर उन्हें हमसे अलग किस मानसिकता के कारण किया गया था ? हमें उस मानसिकता को जानना, समझना व उन प्रयासों को विफल करना है। हम उनके ग्रास क्यों बन जाते हैं इसका कारण यह है कि हम अविद्या व अन्धविश्वासों

सहित कुरीतियों वा मिथ्या परम्पराओं से ग्रस्त हैं। हममें अनेक सामाजिक बुराईयां भी हैं। इसमें जन्मना जातिवाद प्रमुख है जो हमें सबसे अधिक क्षति पहुंचाता रहा है। ऋषि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने इसे समाप्त करने का परामर्श दिया था परन्तु हमने इसे अब तक माना नहीं है। आज भी यह हानिकारक प्रथा हिन्दू व आर्यसमाज में प्रचलित है। इससे अतीत में हानियां हुई है, वर्तमान में भी निरन्तर हो रही है। हमारे विरोधी इसका लाभ अपने कुत्सित इरादों को पूरा करने के लिये करते हैं। यदि हमें हिन्दू समाज व धर्म की रक्षा करनी है तो हमें सभी अन्धविश्वासों तथा अहितकर अविद्या से युक्त परम्पराओं व प्रथाओं को बन्द करना ही होगा। हमें जन्मना जाति को समाप्त कर मनुष्य की पहचान केवल उसकी शिक्षा, चरित्र, नैतिक गुणों तथा उसके कार्यों से करनी होगी। हिन्दू व आर्य कहलाने वाले किसी व्यक्ति में किसी प्रकार का भेदभाव व पक्षपात समाप्त करना होगा। ऐसा करके ही हमारी जाति शक्ति व बल से युक्त होगी। इस स्थिति में प्राप्त होने पर ही हमारे विरोधी हमें हानि पहुंचाने के वह कार्य नहीं कर पायें जो वह अतीत में करते रहे हैं व वर्तमान में भी कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे धर्मबन्धु वास्तविक स्थिति को समझेंगे और अपने धर्म संस्कृति की रक्षा के सभी उपाय करेंगे। हमारे सभी विद्वानों व नेतृत्व करने वाले लोगों को भी कुछ अन्तराल पर व्यक्तिगत चिन्तन सहित सामूहिक चिन्तन करते हुए धर्म व संस्कृति की रक्षा व उपायों पर विचार करते रहना चाहिये।

जब हम धर्म व संस्कृति की रक्षा पर विचार करते हैं तो यह भी आवश्यक है कि हमारे सभी बन्धुओं को अपने धर्म व संस्कृति को यथार्थस्वरुप में जानना चाहिये। हमारा धर्म १ अरब ९६ करोड़ वर्ष से अधिक पुराना है। सृष्टि की आदि में विश्व के सभी लोगों के पूर्वज अमैथुनी सृष्टि में आर्यावर्त के तिब्बत में जन्में थे। सभी का धर्म व मत ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद था। वेद के आधार पर ही हमारे देश की राजनीति चलती थी, धर्म के सभी सिद्धान्तों का स्रोत भी वेद था तथा वेद प्रतिपादित ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति विषयक विचार व मान्यतायें ही हमारी आस्था व विश्वास के विषय थे। ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए हमारे सहस्रों ऋषियों व विद्वानों ने वेदों की सत्यता को जाना था और उसी का प्रचार व प्रसार वह तर्क एवं युक्तियों सहित जनमानस में करते थे। जिज्ञासुओं का शंका समाधान भी किया जाता था। महाभारत काल के बाद धर्म व संस्कृति का यह प्रवाह बाधित हो गया। इसी कारण देश व विश्व के कुछ देशों में कुछ नये मतों का आविर्भाव हुआ। इन मतों की मान्यतायें वेदों के सर्वथा अनुकूल नहीं है। समीक्षा करने पर उनकी अनेक बातें अविद्यायुक्त सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द ने सभी मतों का तुलनात्मक अध्ययन किया था, जिसे उन्होंने अपने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ में उन्होंने तर्क, युक्ति एवं समीक्षा आदि प्रमाणों सहित मत-मतान्तरों की मान्यताओं का अविद्या से युक्त होना सिद्ध किया है। अतः सब सत्य विद्याओं का पर्याय वेद ही हमारा धर्म ग्रन्थ हो सकता है व है।

वेद मान्यताओं एवं सिद्धान्तों को जीवन व देश की सभी व्यवस्थाओं में लागू करने से ही हमारे देश, हमारे धर्म व संस्कृति की रक्षा हो सकती है। हम इस काम में सजग नहीं है। हमें सजग होना होगा नहीं तो बची हुई धर्म व संस्कृति है, वह भी आने वाले समय में विलुप्त व नष्ट हो सकती है। ऋषि दयानन्द प्रणीत सत्यार्थप्रकाश ऐसा ग्रन्थ है कि यदि सभी हिन्दू व आर्य इसका अध्ययन व पाठ करें, इसकी शिक्षाओं को जानें व समझें, इसके अनुसार ही अन्धविश्वासों से सर्वथा रहित आचरण व व्यवहार करें, वैदिक विधि से ईश्वर की उपासना व देवयज्ञ अग्निहोत्र आदि करें और इसके साथ ही सब एक ईश्वर, एक धर्म ग्रन्थ वेद, एक ओ३म् ध्वज, एक मनुष्य जाति, एक सिद्धान्त व मान्यताओं पर स्थिर हो जायें तो हम अभेद्य व अजेय

हो सकते हैं।

एक प्रमुख प्रश्न हमारी जाति की जनसंख्या का भी है जिसका आजादी के बाद से अनुपात अन्य आबादियों की तुलना में पायेगी या नहीं यह तो पता नहीं, लेकिन हमें सावधानी बरतनी है। इस प्रश्न पर भी हमारे नेताओं को विचार करना चाहिये। स्वामी रामदेव जी भी इस विषय में अपने विचार व्यक्त कर चुके हैं कि जनसंख्या नियंत्रण कानून बनना चाहिये। देश के एक प्रमुख टीवी चैनल सुदर्शन न्यूज पर भी कई बार इस विषय पर चर्चा की गई है।

चर्चा में विद्वानों ने स्थिति को विस्फोटक बताया है। यदि हमने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले ३० वर्ष बाद इस देश का स्वरुप बदल सकता है। अतः धर्म व संस्कृति व इसकी रक्षा के साधनों की उपेक्षा न करें और अपनी सन्तानियों के भविष्य का ध्यान रखें। यही निवेदन करने के लिये हमने यह लेख लिख है। हम आशा करते हैं कि हमारे सभी धर्मबन्धु इस विषय पर विचार करेंगे और अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

*पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१*

विद्वान का बल विद्या और बुद्धि है, राष्ट्र का बल सेना और एकता है, व्यापारी का बल धन और चतुराई है, सेवक का बल सेवा और कर्त्तव्य परायणता है, शासन का बल दण्ड विधान और राजस्व है, सुन्दरता का बल युवावस्था है, नारी का बल शील है, पुरुष का बल पुरुषार्थ है, वीरों का बल साहस है, निर्बल का बल शासन व्यवस्था है, बच्चों का बल रोना है, दुष्टों का बल हिंसा है, मुर्खों का बल हिंसा है, मूर्खों का बल चुप रहना है और भक्त का बल प्रभु की कृपा है।

# "क्या कर लेगा कोरोना"

*बने न खांसी और जुकाम, क्या कर लेगा कोरोना।*
*हाथ जोड़कर करे प्रणाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*गप्प गोष्ठी नहीं जुटाएँ, भीड़भाड़ से बचे रहें।*
*नहीं छोड़ना अपना धाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*सैनिटाईजर या साबुन से, भलीभांति निज हाथ धुलें।*
*साफ-सफाई उत्तम काम, क्या कर लेना कोरोना।*

0

*आवश्यक हो बाहर जाना, मास्क लगा लें चेहरे पर।*
*नियमित करें योग-व्यायाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*किसी से मिलना जुलना हो तो, दो मीटर रखनी दूरी।*
*प्रीतिभोज पर लगे लगाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*लक्षण दिखे तो जांच कराएँ, पीड़ित सबसे दूर रहे।*
*छोड़े नहीं शहर या ग्राम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*बाहर की चीजें मत खाएँ, व्यंजन पके रसोई में।*
*सादा भोजन रहे न झाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*घर में ही एकांतवास हो, कम जाएँ दुकानों पर।*
*अभिरूचियों को दें आयाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0

*शासन और प्रशासन के भी निर्देशों को अपनाएँ।*
*धो दें हम विषाणु का नाम, क्या कर लेगा कोरोना।*

0-0

**गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'**
117, आदिलनगर, विकासनगर,
लखनऊ-२२६०२२, दूरभाष : ०९९५६०८७८५

## राष्ट्रचिन्तन

# देश सर्वोपरि होता है.

- लेखक : अखिलेश आर्येन्दु

शास्त्रों और पुराणों में देशहित और देशभक्ति की अनेक कहानियाँ और अनेक प्रेरक कथाएं वर्णित है। वेद जैसे कालजयी ग्रन्थ में तो राष्ट्र के कल्याण को पावन-कर्म माना गया है। वे कौन-कौन से तत्त्व हैं जो देश को महान्, प्रगतिशील, आदर्शवादी और परिपूर्ण बना सकते हैं, इसके बारे में बहुत ही सारगर्भित विवेचना वेदों में की गई है। अथर्ववेद में पृथ्वी की वंदना के लिए पूरा एक अध्याय (काण्ड) ही है। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में वर्णित पृथ्वी की वंदना के जो मंत्र हैं वे हर मनुष्य का धरती मां के प्रति प्रेम, कर्त्तव्य, धर्म और भावना होनी चाहिए, उसे भी बहुत ही मार्मिक ढंग से समझाया गया है। अथर्ववेद के जिस सूक्त में राष्ट्र-धर्म के तत्त्वों का वर्णन किया गया है, वह मंत्र इस प्रकार है-

**सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।**
**सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नुरुलोकं पृथिवी नः कृणोति॥**

(अथर्ववेद १२-१-१)

मन्त्र में कहा गया है - राष्ट्र की प्रगति और कल्याण के लिए आठ तत्त्व आवश्यक है। वे आठ तत्त्व सत्य, उद्यम, ऋत, उग्र (तेज) दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ। ये तत्त्व देश और समाज को उत्तम बनाने के साथ ही साथ मनुष्य के जीवन को भी पावन बनाते हैं। मतलब इन आठों के द्वारा मनुष्य, परिवार, समाज, राष्ट्र और सारी धरती सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् बनाई जा सकती है। एक छात्र कैसे इन राष्ट्रवादी आधारों का पालन या अपने जीवन में निर्माण कर सकता है, एक इंसान कैसे इन्हें आत्मसात् कर सकता है और एक महिला किस प्रकार अपने जीवन का अंग बना सकती है, इसे जानने के लिए उन्हें विस्तार से समझना आवश्यक है।

**देशहित के आठ आधारों (तत्त्वों) में पहला आधार या तत्त्व सत्य को बताया गया है।** व्याकरण के अनुसार सत्य शब्द **अस्तीति** सत् और सतः भावः सत्यम् अर्थात् जिसकी सत्ता है, वह सत्य से भाषित होता है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि चोर, डाकू और दुष्ट जनों की सत्ता है तो वे भी सत्य है। इसका निराकरण करते हुए उपनिषदकार ने कहा है, **'सत्यमेवजयते'**, नानृतम् अर्थात् सत्य की जीत तब होती है जब वह असत्य न हो। इसके अलावा वेद में सत्य की जय के लिए ऋत अर्थात् प्रकृति के नियमों का शाश्वत पालन करना भी साथ में हो। मतलब असत्य से सत्य की जीत नहीं होती। शास्त्र में सत्य की परिभाषा इस तरह दी गई है - **नहि सत्यात्परोधर्मः** अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। सत्योनोत्तभिता भूमि यानी यह धरती सत्य के सहारे ही टिकी हुई है या सत्य ने भूमि को उठाया हुआ है। महर्षि दयानन्द ने सत्यं की परिभाषा करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है - *जो वस्तु जैसी है, वैसी ही मानी जाए, कही जाए, लिखी जाए और पढ़ी जाए वह सत्य कही जाती है।* महात्मा गांधी ईश्वर और सत्य को एक दूसरे को पर्यायवाची मानते थे। इतनी परिभाषाओं से यह पता चलता है कि सत्य राष्ट्रोन्नति का परम आधार या तत्त्व ही नहीं, बल्कि व्यक्ति, परिवार और समाज की प्रगति और कल्याण के लिए भी बहुत जरूरी है। जिस परिवार, समाज और देश में सत्यवादी जन अधिक मात्रा में रहते हैं, वह परिवार, समाज और देश प्रगति की राह पर अनवरत आगे बढ़ता जाता है। सत्य के पालन से जो व्यक्तिगत स्तर पर लाभ होता है, वह है अपने प्रति ईमानददार होना। असत्यवादी व्यक्ति जो सबसे बड़ा अपराध करता है, वह परिवार, समाज और देश के लिए तो करता ही है, अपने प्रति सबसे अधिक अपराध करता है। और जो अपने प्रति ईमानदार न हो वह देश और समाज के प्रति ईमानदार हो ही नहीं सकता है। इस लिए वेद में सबसे पहला देश व समाज की प्रगति का सूत्र गाथा है माना वह सत्य का सार्वजनिक

और वैक्तिक जीवन में जीवन का आधार बनाना। छात्र यदि अपने शिक्षा और लक्ष्य के प्रति ईमानदार नहीं होगा तो वह छात्र नहीं कहा जा सकता है। इसी तरह समाज और देश के हर मनुष्य से यह आशा की जाती है कि वह अपने कर्त्तव्यों का पालन ईमानदारी और निष्ठा के साथ करें।

**समाज और राष्ट्रोन्नति का दूसरा सोपान, सूत्र या तत्त्व है - उद्यम।** उद्यम शब्द तुदादिगण में बृंहू उद्यमने धातु से निष्पन्न होता है। यहां बृहत् का अर्थ उद्यम होता है। उद्यम किए बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती। उद्यम को आर्य-संस्कृति का सूत्र भी कह सकते हैं। संस्कृत में उद्योग अर्थात् उद्यम को प्रमाण के साथ बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है। **"उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मीः, दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति। दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या, यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्रदोषः"** अर्थात् लक्ष्मी, सम्पत्ति, समृद्धि और परिश्रम करने वाले उद्यमी पुरुष का ही वरण करती हैं। इसलिए आलस्य, प्रमाद छोड़कर पुरुषार्थ करना चाहिए। भाग्य के सहारे बैठने वालों को कभी कुछ प्राप्त नहीं होता है। वेद में उद्यम और पुरुषार्थ के बारे में बहुत ही प्रेरक संदेश दिया गया है, **"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।"** अर्थात् काम करते हुए ही हर मनुष्य को सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इतना ही नहीं कर्म करने वालों को कर्मवीर कह कर पुकारा गया है, **"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः"** यानी कृतित्त्व हमारे दाहिने हाथ में है, सफलता हमारे बाए हाथ में है। कहने का मतलब यह है कि पुरुषार्थ और उसके फल में उतनी ही दूरी है जितनी बाएं और दाहिने हाथ में।

अब हमें विचार करना चाहिए कि क्या हम समाज़ और देश के प्रति ईमानदार हैं ? क्या जिस कार्य को करने की हमारी ड्यूटी (कर्त्तव्य) है हम उसके प्रति मुस्तैद हैं ? हमारे अन्दर क्या देश और समाज के प्रति छल-कपट, चालाकी और झूठी शेखी बघारने की प्रवृत्ति तो नहीं है ? यदि है तो यह देश समाज के प्रति क्या छल, बेईमानी और धूर्तताई नहीं हुई ? इन्हीं दुर्वत्तयों से बचते रहने के लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों के माध्यम से हमें सजग किया है। इसके बावजूद भी यदि हमारे अन्दर अपने या सम्बन्धों के स्वार्थ में देश, समाज और संसार के प्रति सच्चे और कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं हुए तो हमारा क्या भला हो सकता है ? भारत और दूसरे विकसित देशों में आज भी जो अन्तर दिखाई पड़ता है वह देश के प्रति कर्त्तव्यों का पालन न करने का है। उदाहरण के तौर पर छोटा-सा देश जापान आज विश्व का सबसे धनी देश माना जाता है। हम जानते हैं क्या, इसने यह कमाल कैसे कर दिखाया ? **जापान की प्रगति की वजह का जो मूल कारण है, वहां के लोगों का देश और समाज के प्रति कर्त्तव्यपालक होना। आज भी जापान का हर व्यक्ति अपनी ड्यूटी के अलावा दो घंटे देश के लिए देता है।** वहीं पर हम भारतवासी देश के लिए कितना समय देते हैं, बताने की आवश्यकता नहीं है।

भारत में उद्यम या पुरुषार्थ की जगह भाग्यवाद ने ले लिया है। आज भी अधिकांश लोग भाग्य का रोना रोते हैं। स्वामी विवेकानन्द कहते थे भाग्य का निर्माण ईश्वर नहीं, बल्कि कर्म के द्वारा होता है। यह हम क्यों नहीं विचार करते कि बिना हाथ से भोजन का कौर उठाए मुंह में नहीं जा सकता, तो बगैर पुरुषार्थ किए भला लक्ष्मी कैसे प्राप्त हो सकती है ? कामचोरी, आलस्य, प्रमाद और दूसरों के धन और सम्पत्ति चुराकर संसाधनों को बटोरने की यह वृति मनुष्य-वृति का सूचक नहीं, बल्कि राक्षसी-वृति का परिचायक है। मतलब देश और समाज को खुशहाल और प्रगतिगामी बनाने के लिए सच्चे उद्यम के अलावा और दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

**समृद्ध और खुशहाल राष्ट्र का तीसरा आधार 'ऋत' बताया गया है।** संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'ऋत' का अर्थ नियम होता है। वेद के मंत्र में ऋत का वर्णन इस प्रकार किया गया है। **"ऋतं च सत्यं चाभीद्धापत्त सोऽध्यजायत"** यानी ईश्वर ने अपने ज्ञानमय तप से ऋत और सत्य को उत्पन्न किया। ऋत प्रकृति का यह शाश्वत नियम है जिसका पालन करना

उतना ही आवश्यक है जितना सत्य बोलना। यह सारी सृष्टि ईश्वरीय नियमों से ही संचालित हो रही है। ये ईश्वरीय नियम ही प्रकृति के नियम कहलाते हैं। इनके पालन करने से ही विश्व, देश और समाज का कल्याण और प्रगति हो सकती है। इन प्राकृतिक या ईश्वरीय नियमों का पालन न करने के कारण आज सकल विश्व में अनेक पर्यावरणीय, ब्रह्माण्डीय, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक और शासन-व्यवस्था संबंधी समस्याएं पूरे मानव समाज के दुख और संताप का कारण बन गई है। इस लिए देश और समाज के हर मनुष्य का यह परम कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने समाज, परिवार और देशहित में प्रकृति के शाश्वत नियमों का पालन करे। प्रकृति के शाश्वत नियम उदाहरण के रूप में समय पर सृष्टि की हर चीज कार्य कर रही है। सभी वस्तुएं अपने स्वभाव के अनुसार ही व्यवहार करता है। प्रकृति की हर वस्तु हर पल अपने कार्य यानी ड्यूटी में लगी हुई है। प्रकृति के हर पदार्थ में जो गुण है वह उसी के अनुसार व्यवहार करता है। इसके बारे में हमने क्या कभी विचार किया ? इनका मतलब यह होता है कि जैसे सृष्टि का हर कण अपने कार्य में निरन्तर लगा हुआ है और अपने स्वभाव के अनुसार व्यवहार करता है, उसी प्रकार से मनुष्य का स्वभाव मनुष्यता का ही होना चाहिए। जैसे सृष्टि की हर चीज समय से पाबंद है उसी तरह से हमें भी समय का पाबंद होना चाहिए। इस लिए 'ऋत'को राष्ट्रोन्नति का महत्वपूर्ण आधार माना गया है। इससे महज देशहित नहीं होता, बल्कि हर इंसान अपने जीवन के लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकता है।

**देशोन्नति का चौथा आधार तत्त्व है -** तेजस्विता अर्थात् तेज। समाज के हर इंसान में तेजस्विता का होना बहुत आवश्यक बताया गया है। केवल वेद में ही नहीं, बल्कि बौद्ध और सिख मतावलम्बी भी तेजस्विता को बहुत आवश्यक मानते हैं। तेजस्विता का साधारण रूप से जोश के साथ कार्य करना कह सकते हैं। बिना जोश के बड़ा-सा-बड़ा लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सकता है। जोश ही आलस्य और प्रमाद को समाप्त करता है। जिस देश के नागरिकों में देश और समाज के प्रति जोश नहीं होता, वह समाज और देश झील की ही स्थिति में रह जाता है। मतलब जैसे झील का पानी स्थिर होता है, वही हाल देश का भी होता है। जोश दिलाते ही मनुष्य में एक उत्साह और चमक आ जाती है और उसमें संकल्प पैदा हो जाता है- अमुक कार्य करके ही दम लूंगा। बिना जोश के मनुष्य में एकरसता भी नहीं आती है।

दीक्षा देश समाज के प्रगति का महत्वपूर्ण पांचवां तत्त्व है। संस्कृत में दीक्ष धातु के कई मायने होते हैं। यहां पर दीक्षा का अर्थ व्रत या संकल्प लेना है। देश और समाजोन्नति के लिए शुभ संकल्प लेना ही राष्ट्र-दीक्षा कहलाती है। मतलब व्रत के द्वारा देश और समाज के मंगल कार्यों के लिए पवित्र मन से समर्पित हो जाना दीक्षा कहलाती है। छात्र अपने शुभ लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाए वह 'दीक्षा' है। छात्र जीवन में संयम, नियम और सत्य वाचन का व्रत लेते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्राणपान से लग जाना दीक्षा है। उसी प्रकार हर देशवासी को भी देशोन्नति के लिए व्रत लेकर अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पित हो जाना चाहिए। अभीष्ट की प्राप्ति तभी हो सकती है।

**छठा तत्त्व समाजोन्नति का तप बताया गया है। तप को राष्ट्र की निधि कहा गया है।** साधारणतौर पर तितिक्षा या सहन करना तप है। शास्त्र में कहा गया है, **"तपः स्वधर्म वर्तित्वम्"** और **"तपः स्वकर्म वर्तित्वम्"** अर्थात् सभी को अपने धर्म और कर्म का पूरी निष्ठा और सहिष्णुता के साथ पालन करना तप कहलाता है। देश में जो जिस कार्य को कर रहा है उसे बहुत ईमानदारी और परिश्रम के साथ करता रहे, यह उसका तप है। चाहे कितनी भी कठिनाई आए या चाहे जितना लोभ दिया जाए, उसे नजरअंदाज करके अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् पालन करते जाए यह ही सांसारिक जीवन में तप है। जिस राष्ट्र में तपस्वी जन नहीं रहते वह राष्ट्र कभी भी खुशहाल हो ही नहीं सकता है।

**सातवां राष्ट्रोन्नति का आधार या तत्त्व है-**

ब्रह्म। ब्रह्म को वेद में ज्ञान-विद्या कहा गया है। सब कुछ ठीक होते हुए भी यदि हमारे अन्दर ज्ञान की कमी है तो हम वह नहीं प्राप्त कर सकते जिसे प्राप्त करना चाहते हैं। विद्या शब्द विद् धातु से बना है। जिसका अर्थ होता है जानना। 'जानना' साधारण तौर पर बहुत गहरा नही लगता है, लेकिन जब कार्य और शिक्षा के लिए यह प्रयोग किया जा रहा हो तो यह बहुत गहराई ले लेता है। यह जानना कि मैं कौन हूँ ? यह जानना कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है ? यह जानना कि देश और समाज के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं ? इसकी जानकारी बिना विद्या-ज्ञान के क्या हो सकती है ? इसलिए इसे राष्ट्र का महत्त्वपूर्ण आधार माना गया है। विद्या का मतलब केवल किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तत्त्वों की ठीक जानकारी होना चाहिए। इससे हमारी सर्वोन्नति हो सकती है। इसके लिए तप की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए ब्रह्म (विद्या) को भी राष्ट्रोन्नति का आधार माना गया है।

**राष्ट्र और समाजोन्नति का आठवां तत्त्व यज्ञ बताया गया है।** यज्ञ शब्द यजन धातु से बना है। जिसका अर्थ होता है करना। जैसे आमतौर पर यज्ञ का अर्थ हवन या अग्निहोत्र जाना जाता है। शास्त्र में यज्ञ का अर्थ देव पूजा, संगतिकरण और दान वर्णित है। देवपूजा का मतलब पूज्य का पूजनऔर अपूज्य का त्याग करना। संगतिकरण का अर्थ विभिन्न वर्गों और स्वार्थों का संतुलन और दान का अर्थ होता है - अपनी उपलब्धि में से देश के लिए बिना स्वार्थ के त्याग करना। समाज का आम आदमी किस तरह राष्ट्र-यज्ञ में अपनी आहुति दे सकता है और छात्र किस प्रकार राष्ट्र-यज्ञ सम्पन्न कर सकता है, विचार करना चाहिए।

*- पता : टी-३३, ग्रीन पार्क मेन, नई दिल्ली-११००१६, मोबा. : ९८६८२३५०५६*

**यज्ञ करने वाले स्वर्ग को जाते हैं.**
**ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम्।**

*नये सत्र के लिये छात्र-छात्रायें विद्यालय में प्रवेश करेगे। कुछ बच्चे छोटी कक्षाओं में और कुछ बड़ी कक्षाओं में। माता-पिता इसी चिन्ता में दुबले होते रहते हैं कि बच्चों को कौन से विद्यालय एवं महाविद्यालय में प्रवेश दिलाये कौन-कौन से विषय लिये जायें। पालक अपनी सोच बच्चों पर थोपते हैं।*

**मेरा पालकों से अनुरोध है कि**

- *विद्यालय व महाविद्यालय का चयन विज्ञापन के आधार पर न करें। स्वयं उसका निरीक्षण कर चुनाव करें।*
- *अपने बच्चों को विषय चुनने की स्वतंत्रता दें।*
- *जहां तक हो सके बच्चों को संस्कारी विद्यालय एवं महाविद्यालय में प्रवेश दिलायें।*
- *विद्यालय व महाविद्यालय का चयन करते समय अपनी जेब का ध्यान रखें।*
- *यथासम्भव छात्राओं को छात्रा विद्यालय एवं महाविद्यालय में ही प्रवेश दिलायें।*
- *बड़े बच्चों के साथ पालक अपना व्यवहार दोस्ताना रखें।*
- *अपने बच्चों पर विश्वास करना चाहिए।*
- *यथा सम्भव माता-पिता बच्चों की शिक्षा की प्रगति पर स्वयं ध्यान दें।*
- *बच्चों को पाठ्यक्रम की पुस्तके ही पढ़ने हेतु प्रेरित करें।*
- *पालक माह में कम से कम एक बार विद्यालय व महाविद्यालय में प्राचार्य/प्राचार्या से अवश्य मिलें।*
- *बच्चों को टी.वी. देखने का एक निश्चित समय रखें। यदि आप इन सूत्रों का पालन करें तो निश्चित ही आपके बच्चे संस्कारी एवं शिक्षित होगे।*

# सैद्धान्तिक "कर्मफल के कुछ प्रमुख पहलुओं पर विचार"

- खुशहालचन्द्र आर्य

कर्मफल का विषय इतना गंभीर है कि इसकी पूरी जानकारी पाना असम्भव है, फिर भी कुछ मुख्य-मुख्य जानकारियाँ हर व्यक्ति को होनी चाहिए जिससे वह जान सके कि ईश्वर की न्याय व्यवस्था में कोई पक्षपात रियायत व भेदभाव नहीं है। वह बिल्कुल निष्पक्ष है। जो व्यक्ति जितना अच्छा या बुरा कर्म करेगा, उसको अच्छे कर्मों का फल सुख के रुप में और बुरे कर्मो का फल दुःख के रुप में, हर हालत में निश्चित ही मिलेगा और कम-अधिक भी नहीं मिलेगा। इसलिए हर समझदार व आस्तिक व्यक्ति को बुरे कर्म करना छोड़ देने चाहिए और अच्छे कर्म करने चाहिए जिससे उसकी उन्नति व समृद्धि दिनों दिन बढ़ती रहे। यदि कोई व्यक्ति पूरे जन्म में ही निष्काम कर्म किये हो यानि स्वार्थ की भावना से न करके परोपकार की भावना से किये हों तो उसको मरने के बाद निश्चित ही मोक्ष मिलेगा जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसी की प्राप्ति के लिये जीव अपने कर्मानुसार अनेक योनियों से होते हुए अन्त में मनुष्य योनि में आता है। मनुष्य योनि में किसी ने पूरे जीवन शुभ व परोपकार के काम तथा बुरे काम भी किये हैं। उसकी मरने के बाद दो गतियाँ होती है। एक गति यह है कि यदि उसने ५०% से अच्छे काम अधिक किये हैं तो उसको दूसरा जन्म योनि में ही मिलेगा। और अच्छे कर्म जितने अधिक होगें उतनी ही अच्छी मनुष्य योनि मिलेगी और यदि उस जीव के अच्छे कर्म ५०% से कम होगे याने बुरे कर्म अधिक होगे तो मनुष्य से नीचे की योनियां पशु-पक्षी, कीट-पतंग, कीड़े-मकौड़े योनियाँ मिलेगी। यदि ५०% से कुछ कम अच्छे कर्म हैं तो उसको गाय या घोड़ा की योनि मिलेगी। और भी अधिक कम अच्छे कर्म हैं तो उसको कुत्ता, बिल्ली, गधा आदि की योनि मिलेगी। इस प्रकार अच्छे कर्म कम होते जायेंगे और बुरे कर्म अधिक होते जायेंगे, उसी हिसाब से निम्न योनियाँ मिलती जायेगी। इस मनुष्य योनि को छोड़ते वक्त जीव की तीन गतियाँ होती हैं - (१) मोक्ष (२) मनुष्य योनि से मनुष्य योनि ही हल्की या भारी (३) मनुष्य होनि में पशु-पक्षी, कीट-पतंग या वनस्पति आदि। अब कर्म फल पर और अधिक प्रकाश इसी भांति डालते हैं।

**(१) कर्म दो किस्म के होते हैं :-** पहला स्वाभाविक कर्म दूसरा नैमित्तिक कर्म। स्वाभाविक कर्म या साधारण वह होता है जो मनुष्य को कम और पशु पक्षी व कीट पतंग को अधिक होता है। इसमें खाना-पीना, सोना-जागना, बैठना-उठना सन्तान उत्पन्न करना आदि होते हैं। इसका ईश्वर की तरफ से कोई फल नहीं मिलता। नैमित्तिक कर्म वे कर्म होते हैं जिनका ईश्वर फल देता है। ये कर्म मनुष्यों पर ही लागू होते हैं, पशु-पक्षियों पर नहीं। ये कर्म दो किस्म के होते हैं अच्छे और बुरे। अच्छे कर्म में होते हैं दान देना, किसी का उपकार करना, कुएँ, धर्मशाला, हॉस्पिटल, गोशाला आदि खोलना। दीन-दुखियों को अन्न व कपड़े बांटना, दया, करुणा करना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि न करना, सत्य बोलना, चोरी न करना, सबसे सद् व्यवहार रखना, किसी को धोखा न देना, ईमानदारी से व्यापार करना। ये सब काम अच्छे काम है। इनका ईश्वर सुख के रुप में फल देता है। चोरी करना, झूठ बोलना, किसी को धोखना देना, बेईमानी करना, किसी को दुःखी करना आदि। ये कर्म बुरे कर्म हैं, इसका ईश्वर दुःख के रुप में मनुष्य को फल देता है। कुछ कर्म मिश्रित कर्म भी हैं। इसमें अच्छे व बुरे दोनों किस्म के कर्म आते हैं। जैसे दुकानदारी करना, खेती करना, पशुपालन करना, डाक्टरी करना, वकीली करना, बच्चों को पढ़ाना, नौकरी करना आदि। इसमें मनुष्य को अच्छे बुरे दोनों काम करने पड़ते हैं। ईश्वर अच्छे काम का फल सुख के रुप में और बुरे कर्म का फल दुःक के रुप में देता है। यह हिसाब ईश्वर ही अपने पास रखता है। बहुत लोग कहते हैं किसी ने बुरे कर्म एक

सौ किये और अच्छे कर्म साठ किये तो ईश्वर सौ में से साठ घटाकर केवल चालीस बुरे कर्मों का फल ईश्वर देगा, सो ऐसी बात नहीं है। ईश्वर सौ बुरे कर्मों का फल अलग देगा और साठ कर्मों का फल अलग देगा। ईश्वर के घर में घटाव जोड़ नहीं है। एक बात ये याद रखने योग्य है कि जीव का पुनर्जन्म उसे जाति, आयु व भोग के आधार पर, यानि वह जीव अगली योनि में किस जाति में जन्म लेगा यानि मनुष्य बनेगा या पशु-पक्षी या अन्य योनि में जायेगा। आयु का तात्पर्य यह होता है कि वह उस जन्म में कितने वर्षों तक जीवित रहेगा। तीसरा वह जीव किसके घर में पैदा होगा और क्या भोग करेगा यानि राजा या साहूकार के घर में पैदा होगा तो अच्छा खायेगा-पीयेगा और गरीब घर में पैदा होगा तो हल्का भोजन करेका और कभी भूखा भी रहना पड़ सकता है। उम्र और भोग जीव घटा या बढ़ा सकता है परन्तु जाति बदली नहीं जा सकती। उम्र यदि किसी की साठ साल निर्धारित की है तो वह संयम और ब्रह्मचर्य से आयु बढ़ा सकता है। भोग भी अधिक व कम कम कर सकता है पर जाति नहीं बदल सकता। दूसरी बात यह है कि आयु ईश्वर वर्षों में नहीं करता है बल्कि सांसों पर निर्धारित करता है यानि ईश्वर जीव में जीतने श्वांस डालता है उतने ही श्वांस लेकर जीव मृत्यु को प्राप्त हो जाता है इसीलिए संयमी व ब्रह्मचारी श्वांस कम लेते हैं तो उनकी आयु बड़ी होती है। भोगी व्यक्ति श्वांस अधिक लेता है उसकी आयु कम होती है। हम जो कर्म करते हैं उनकी तीन स्थिति होती है। जो काम कर रहे हैं उनको क्रियमाण कर्म कहते हैं, तो कर्म कर चुके हैं उनको कृति कर्म कहते हैं और जो काम करेंगे उनको करिष्माण कर्म कहते हैं। जिन कर्मों का फल हाथों हाथ मिलता है वह कर्म समाप्त हो जाते है जैसे किसी ने चोरी की और उसको छः महीने की कैद हो गई तो यह कर्म यहीं समाप्त हो गया। और जिन कर्मों का फल इस आयु में नहीं मिलता है, उसको संचित कर्म कहते हैं। इनका फल ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार कभी भी दे सकता है। इन्हीं के आधार पर पुनर्जन्म होता है।

(२) योनि दो किस्म की होती है :- पहली भोग योनि और दूसरी कर्म योनि। भोग योनि में पशु-पक्षी, कीट-पतंग आते हैं। इसमें खाना-पीना, सोना-जागना बच्चे पैदा करना आदि जरुरी काम हैं। इनका ईश्वर फल नहीं देता। दूसरी कर्म योनि होती है। ये केवल मनुष्य में ही होती है। इससे ईश्वर किये हुए कर्मों का फल देता है। इसी से सारी सृष्टि चलती है। पूरा विवरण ऊपर लिख चुके हैं। गीता में कृष्ण भगवान ने भी तीन किस्म के कर्म बताये हैं। पहला साधारण कर्म जैसे खाना पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना आदि इनका ईश्वर कोई फल नहीं देता। दो किस्म के कर्म और बताये हैं। वे हैं अकर्म और विकर्म। जो कर्म निःस्वार्थ भाव से परोपकार की दृष्टि से किये जावें उनको अकर्म कर्म कहते हैं। जो कर्म अपने स्वार्थ की दृष्टि से किये जावें उनको विकर्म कर्म कहते हैं। दोनों का फल अच्छे कर्मों का सुख के रुप में और बुरे कर्मों का फल दुःख के रुप में जरुर-जरुर मिलता है।

वैसे तो कर्म फल की व्याख्या बहुत बड़ी है परन्तु मेरी बुद्धि के अनुसार मुझे जो ज्ञान है उसके अनुसार लिखने का प्रयास किया है। कृपया सुधि पाठकगण इतने को ही पर्याप्त समझ कर लाभ उठावें ताकि मेरा परिश्रम सफल हो सके। इतना ही निवेदन करके मैं लेख को विराम देता हूँ।

*पता :- गोविन्दराम एंड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७*

प्रण करते हैं संस्कृति की
शाम न होने देंगे,
अमर शहीदों की समाधि
बदनाम न होने देंगे।
जब तक रग में गर्म लहू की
एक बूंद भी बाकी है,
भारत की आजादी को
गुमनाम न होने देंगे॥

# वैचारिक समस्त दुःखों का कारण धर्म ?

*पदार्थ विज्ञान (भौतिकी) के आविष्कारों से प्रभावित होकर पृथ्वी तल पर बसने वाली अनेक जातियों के समागम और उनके साहित्य, इतिहास तथा संस्कृति का अवलोकन तथा समाज की आर्थिक व्यवस्था की छानबीन कर क्रांति (भौतिक –सं.) के नेता इस परिणाम पर पहुंचे थे कि समस्त सांसारिक दुःखों का एक मात्र कारण 'धर्म' की कल्पना है। –* ***श्री विनायकराव विद्यालंकार***

स्कूली जीवन में हमने एक कहानी पढ़ी थी। कहते हैं, एक सिंह शावक अपनी माँ से बिछुड़ कर सियारों के शावकों में रहने लगा। वह सियारों के भात ही खाता-पिता-रहता और उनके स्वभाव का बन गया था। एक दिन किसी नदी के किनारे इन सियारों के साथ यहसिंह शावक भी पानी पीने गया। प्रसंगवश उसी नदी के दूसरे किनारे पर एक बब्बरसिंह भी अपनी प्यास बुझाने आ गया। उसने देखा कि सियारों के समूह में उनका पति-भाई भी सियारों की तरह खड़ा है। उसे बड़ी मानसिक वेदना हुई और वह जातीय अपमान सहन न कर सका। उसने एक जोरदार दहाड़ मारी, तो सियारों का झुण्ड तो भाग गया, परंतु वह सिंह शावक वहीं खड़ा रह गया। उचित अवसर पाकर वह बब्बरसिंह तैर कर दूसरी ओर आ गया और उस सिंह शावक के पास जाकर कहा – तुम सिंह -शावक हो, मेरी जाति बिरादरी के हो। शेर जंगल का राजा होता है। अब तुम मेरे साथ चल कर रहो।

यह सुनकर सिंह – शावक बोला, नहीं तुम झूठ बोलते हो, मैं सिंह नहीं सियार हूँ। मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता! इस बात का क्या प्रमाण है कि मैं सियार नहीं शेर हूँ ? इस उत्तर को सुनकर उस बब्बर शेर को एक उपाय सूझा। उसने सिंह – शावक से कहा कि तुम मेरे साथ नदी के किनारे चलो। स्थिर जल में तुम अपना मुँह देखो। यदि तुम्हारे औरमेरे मुख तथा शरीर की बनावट में समानता दिखे, तब तो तुम्हें मेरी बात पर विश्वास हो जाएगा। सिंह – शावक उस सिंह के साथ नदी के स्थिर तथा स्वच्छ जल के स्थान पर गया। उसने जल में अपना मुंह सहित सम्पूर्ण शरीर का प्रति बिम्ब देखा और फिर एक बार पुनः उस बब्बर शेर की ओर बड़े ध्यानपूर्वक देखा। उसे अपने तथा बब्बर शेर में सभी समानताएँ दिखीं। वह बहुत खुश हुआ। बब्बर शेर ने उससे कहा – मेरी तरह तुम एक दहाड़ लगाओ। सिंह – शावक ने भी उसके साथ दहाड़ लगाई। सारा वन इन दोनों के दहाड़ों से गूंज उठा। जंगल के अनेक पशुओं के साथ चिड़ियों का समूह भी भय के कारण उधर-ऊधर उड़ने लगा। अब सिंह – शावक को आत्म विश्वास हो गया कि वह सियार (श्रृगाल) नहीं जंगल के राजा सिंह की बिरादरी का है। वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसे स्वाभिमान जागृत हो गया और वह उस सिंह के साथ छलांग लगाते हुए घनघोर जंगल में रहने चला गया। पाठकों इसे कहते हैं – स्वाभिमान और आत्म-गौरव। योग्य सचेतक के परामर्श होने से अस्मिता, आत्म-गौरव तथा स्वाभिमान को जगाने भर की आवश्यकता है।

"एक आर्य विद्वान् के मतानुसार जिस समय आर्यसमाज (१८७५) का जन्म हुआ था, उस समय हम भारतीयों को अनेक प्रकार की कुरीतियों और खतरों ने घेर रखा था। एक ओर हमारी अन्ध श्रद्धा तथा अविवेकता थी तो दूसरी ओर धार्मिक संकुचितता ने हमें विदेशियों के सम्मुख हास्यास्पद बना रखा था। साथ ही साथ इस्लाम और ईसाइयत (दोनों विदेशी सम्प्रदाय – लेखक) के तीव्र हमले भी हो रहे थे। विदेशी शिक्षा मैकाले द्वारा निर्धारित – ने भारतीयों के मस्तिष्कों को ही बदल दिया था। जिससे उन्हें अपने देश, धर्म और संस्कृति से घृणा होती जा रही थी।"

ठीक उसी समय सभ्य कहाये जाने वाले संसार में धर्म के विरुद्ध एक अन्य प्रकार की क्रांति का बीजारोपण

**वैज्ञानिक**
भौतिक पदार्थों की मीमांसा करने वाला वैज्ञानिक कहलाता है।

हो रहा था। वे सांसारिक समस्त दुःखों का एक नामकरण 'धर्म' मानते थे। प्रतीत होता था कि समस्त भारत एक नाव पर सवार है और ऊपर से घनघोर वर्षा हो रही है। नदीं में भी बाढ़ तथा उसकी ऊंची ऊंची लहरें नाव को जोरदार थपेड़े मार रही थीं। नाव के नाविक यद्यपि हृष्ट-पुष्ट और बलवान थे, परन्तु उनकी मति या बुद्धि किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रही थी। नाव में सवार सारे नागरिक इस भयावह स्थिति के कारण न केवल भयभीत अपितु अपने आप को मृत्यु के आसन्न मानने लग गये थे।

ऐसी गंभीर और विषम परिस्थिति में परमपिता परमात्मा की कृपा से एक महान आत्मा ने इस देश में जन्म लिया। इस आत्मा के अवतीर्ण होने के पूर्व २,५०० वर्ष पहले भी एक विभूति स्वामी शंकराचार्य का जन्म हुआ था। किन्तु उनका 'जगत् मिथ्यावाद' तीव्रता 'ब्रह्म सत्यम' की आंधी में विलुप्त हो चुका था। सर्वत्र ब्रह्मवाद किन्तु यथार्थ से कोसों दूर होने के कारण समाज बिखर चुका था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती का शुभागमनतथा धर्म, संस्कृति तथा राष्ट्र की रक्षा हेतु उन्होने एक सजग और सतर्क नाविक बनकर इस डूबते जहाज की रक्षा की थी।

इधर ठीक इन विचारों के समानान्तर कथित सभ्य विदेशियों के विचार प्रवाह भारतीयों को प्रभावित कर रहे थे। भारतीय विद्यालयों तथा विदेशी विश्वविद्यालयों से शिक्षित-दीक्षित हमारे भारतीय युवा तर्क और विज्ञान से विमुख हमारी खोखली अन्ध-श्रद्धा को टक्कर मारने लगे। इसके परिणाम स्वरुप शिक्षित वर्ग में 'धर्म' के प्रति अश्रद्धा और अनास्था बढ़ने लगी। यहां तक कि बंगाल के श्रेष्ठ वर्ग के कुलीन, सभ्य तथा अशिक्षित अपना मत, परिवर्तन कर धड़ाधड़ ईसाई बनने लगे। राजाराम मोहन राय तथा महेशचन्द्र राय के समाज सुधारवादी भी ईसाइयत और अंग्रेजी राज को ईश्वर का 'वरदान' मानकर फिरंगियों के राज्य की दीर्घायु की कामना करने लगे। वस्तुतः यह समय भारत के लिए जीवन-मरण जैसा था। भारत की धार्मिक सांस्कृतिक, आर्थिक तथा सामाजिक संगठन की चूलें जड़ से हिलने लगी थीं। यह पढ़कर ही पाठक रोमांचित हो उठते है। बस, केवल रक्षार्थ वह परमात्मा ही था।

**मीमांसक**
अभौतिक वस्तुओं की शोध करने वाला मीमांसक गवेषक कहलाता है। वह ज्ञानी और विज्ञानी दोनों होता है।

महर्षि दयानन्द ने अपने शिष्यों के अनुरोध और आग्रह को मानकर अपने इस संगठन का नाम 'आर्यसमाज' रखा। इसके पूर्व बंगाल में 'ब्रह्म समाज' तथा दक्षिण-पश्चिम में 'मराठी समाज' में प्रार्थना समाज अपने-अपने ढंग से कार्यरत थे। ऋग्वेद में यह प्रसिद्ध मंत्र इस प्रकार है -

इन्द्र वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तोऽराव्णः ॥ ऋग्वेद ९

इस मंत्र में मुख्यतः ३ बातें हैं :- १. अच्छे कार्यों द्वारा जीवन को सुन्दर बनाना २. पापियों का नाश करना तथा ३. परम ऐश्वर्य शक्तियों को बढ़ाना।

महर्षि दयानन्द ने आर्यों को यह त्रिमुखी उद्देश्य वाला ध्येय घोष सौंपा है। अच्छे कार्यों को निर्देशित करतेहुए आर्यसमाज के स्वर्णिम १० नियम निर्धारित किये गये हैं। विगत ५-६ दशकों से इन पंक्तियों का लेखक आर्य विद्वानों और उनके साथ आर्य भजनोंपदेशकों से रटे-रटाये कुछ व्याख्यान तथा भजनों को सुनते आया है। आर्यसमाज के स्वर्णिम युग में हमारे पूर्वज आर्य विद्वानों ने जो कुछ परिश्रम कर बौद्धिक जगत् को सामग्री सौंपी, बस हम अपने बाप-दादों की कमाई ही खाकर कोरी दक्षिणा या वेतनभोगी बनकर जीवन यापन कर रहे हैं। बुद्धिमान सन्तानें अपने पूर्वजों की सम्पत्ति के दायभाग ग्रहण कर उस पूंजी को और बढ़ाते हैं तथा निकामी, आलसी, अकर्मण्य, दरिद्री सन्तानें पूर्वजों के सम्पत्ति को खाकर रोड़ पति (सड़क छाप) बन जाते हैं। बुद्धिमानी तो यह होना चाहिए कि रोड़-पति (निर्धन) सन्तानें, पुरुषार्थ, पराक्रम, आत्म-विश्वास तथा महात्वाकांक्षी बनकर महान ऐश्वर्यशाली बन उपरोक्त मंत्र में निर्देशित तथ्यों को प्राप्त करें।

यह ठीक है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वैदिक सिद्धान्त के अतिरिक्त विश्व में समाजवाद, साम्यवाद, उपभोक्तावाद आदि विचारों ने संसार को झकझोर कर रख दिया है। ये तीनों वाद भोगवादी संस्कृति, प्रवृत्तिमार्ग तथा भौतिकावादी है। डार्बिन का विकासवाद तथा कार्लमार्क्स के साम्यवाद ने संसार के कई राष्ट्रों की कमर तोड़ दी है। विश्व में दो-दो महायुद्ध हो चुके हैं। इनके कारण विश्व मानवता कराह उठी है। पश्चिमी देश भोगवाद से ऊब चुके हैं। सभी की दृष्टि अब तो भारत के आध्यात्मवाद की ओर लगी हुई है। सच्चा अध्यात्मवाद अर्थात् वेद संसार की सम्पत्ति है। वेद तथा वैदिक अध्यात्मवाद के प्रचार-प्रसार का दायित्व महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज तथा उसके कर्णधारों को सौंप दिया है। यह आत्म-चिन्तन का विषय है कि हम आधुनिक भौतिकवादी संसार को क्या दे रहे हैं ? भारत तथा विश्व के मत मतान्तर आज नहीं तो कल समाप्त हो जायेगें। ४थे या ७वें आसमान की धारणा 'नासा' के वैज्ञानिक पहले ही झुठला चुके हैं। अब वो गेंद आर्यसमाज के पाले में आ गिरी है। यदि अब भी सचेत न हुए तो फिर ....... ।

अतः आर्यसमाज के कर्णधारों तथा विद्वानों को पारस्परिक मतभेद पद-लोलुपता, अचल सम्पत्तियों का निर्माण का नशा, मठों तथा आश्रमों की स्थापना करने का अभियान छोड़कर मात्र आर्यसमाज के 'ओ३म् ध्वज' के तले आकर वेद आकर वेद के सिद्धान्तों का प्रचार विश्व स्तर पर करने का आन्दोलन छेड़ देना चाहिए। और यों भी आर्यसमाज आज अन्तर्राष्ट्रीय विश्व का सशक्त संगठन बन चुका है। वैदिक धर्म अति आशावादी है, आस्तिक तथा पुनर्जन्म वाली है। मोक्ष के बाद आत्मा के अन्तरागमन के अध्ययन को मानने अनुशरण कर विश्व को पुनः वैदिक स्वदेश का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ कर दें। तभी हमारा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का ध्येय-घोष पूर्ण हो सकेगा।

पता : 'सुकिरण', अ-१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

# सिंह की मनस्विता

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्रायोऽपि कष्टां दशा मा,
पन्नोऽपिविपन्नधीर्धृतिरपि प्राणेषु गच्छत्स्वपि ।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भपिशितग्रासैकबद्धस्पृहः
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ॥ (कस्यचित्)

भावार्थ - सिंह का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि - वह भूख से अत्यन्त कृश हो गया है, वृद्धावस्था की दुर्बलता भी जिस पर मंडरा रही है। समस्त इन्द्रियाँ जिसकी शिथिल हो गई, न तो उसमें पूर्व सदृश अजस्र शक्ति है, न तेज ही है, बहुत ही कष्टकारक स्थिति में आ गिरा, परन्तु इतनी कष्टमय बुद्धि के धारण करने पर भी, प्राणों के चले जाने पर भी-मदोन्मत्त बड़े-बड़े हाथियों के नाना प्रकार के गण्डस्थलों के रक्त की धारा से अपनी प्यास बुझाने वाला वह सिंह क्या अब पुराने व सूखे चारे तिनके की ओर दृष्टिक्षेप करेगा ? कदापि नहीं। वह चाहे मर जरूर जाएगा परन्तु मनस्वीजनों के स्वाभिमान की रक्षा करने वालों में अग्रणी-वह सिंह कभी सूखे घास की ओर अपनी आंख नहीं डालेगा।

**यही स्थिति- स्वभाव तेजस्वी-मनस्वी पुरूषों की है। कभी भी किसी भी विपदा में वे अपने आपको गिराते नहीं है। चाहे दुःख उठा लेंगे, मर जावेंगे परन्तु वे अपने स्तर पर दृढ़ासीन रहेंगे।**

- सुभाषित सौरभ

राष्ट्रीय

# बच्चों, बेसहारा लोगों की अनदेखी

**किसी भी कानून को बनाते समय सब कुछ उसके प्रावधानों के दस्तावेजी स्वरूप पर निर्भर करता है । गरीब बच्चों, महिलाओं की भलाई के लिए कानून निर्माताओं को इस तथ्य का ध्यान रखना होगा ।**

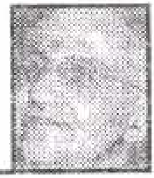

यह दुख की बात है कि बजट सत्र के दौरान संसद में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक पर बहस नहीं हो सकी और उसे पारित नहीं किया जा सका। एक देश जहां सदियों से भीषण अकाल पड़ते रहे हों, जहां २० करोड़ से अधिक व्यक्ति भुखमरी बच्चा रहता है, वहां करोड़ों लोगो की ऐसी उपेक्षा विश्वासघात के समान है। अगर हमारे कानून निर्माता कुछ खामियों को सुधारकर इस कानून को पारित कर देते तो इतिहास बन सकता था। भारत विश्व के उन कुछ देशों में शामिल होता, जिनमें करोड़ों गरीब महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को भोजन मुहैया कराना सरकार का वैधानिक कर्त्तव्य हो जाता।

विधेयक में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत रियायती दरों पर खाद्यान्न देने के कुछ प्रावधानों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। संशोधित विधेयक में रियायती अनाज लेने के लिए गरीबी रेखा के नीचे (बीपीएल) होने की पात्रता को समाप्त किए जाने की संभावना है । इसके बजाय राज्य सरकारें ऐसे घरों और परिवारों को पहचान करेंगी जो अमीर है और इन्हें पीडीएस से अलग कर दिया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों के तीन चौथाई परिवारों और लगभग आधे शहरी परिवारों को गेहूँ, चावल या मोटा अनाज रियायती दर पर मिलेगा। बीपीएल को खत्म करने का यह पहला मामला नहीं है। सरकारी आंकड़ों में गरीबी को बहुत कम करके दिखाया जाता है। गरीबों को पहचान के लिए जो भी गिनती हुई है उनमें जितने निर्धन परिवारों को शामिल नहीं किया गया, उससे अधिक को हटा दिया गया है।

विधेयक में प्रति परिवार के लिए हर माह २५ किलो खाद्यान्न का प्रावधान वर्तमान ३५ किलो से कम है। यह एक परिवार की अनाज की जरूरतों का लगभग आधा है। सरकारी गोदामों में लाखों टन अनाज सड़ता है, तब इस तरह की कंजूसी निराश करती है। रियायती खाद्यान्न में दालों और तेल बीजों को भी शामिल किया जाना चाहिए

विधेयक में उन लोगों के लिए तमाम संरक्षण समाप्त कर दिया गया है, जो लोग भूखमरी के सर्वाधिक शिकार है। खाद्यान्न अधिकार के किसी भी कानून में सबसे पहले उन लोगों की सुरक्षा होनी चाहिए, जो भोजन से एकदम वंचित है। स्कूल न जाने वाले बच्चों को निराश्रित व बेघर लोगों के खाने-पीने की कोई व्यवस्था विधेयक में नहीं की गई है। इन्हें भोजन मुहैया कराने के इंतजाम होने चाहिए। आशा है, संसद में बहस के बाद इन प्रावधानों को शामिल कर लिया जायेगा। इस तरह की व्यवस्था सदियों से चल रही लंगर जैसी परम्परा में है। दुख की बात है कि वर्तमान भारत में यह परम्परा समाप्त हो रही है। तमिलनाडु, उड़ीसा जैसे राज्यों में वर्षों से निराश्रितों को भोजन देने के कार्यक्रम चल रहे हैं। यह कार्यक्रम वृद्धों, अपंगों, असहाय लोगों और महिलाओं को भूख से बचाने में कारगर साबित हुए हैं। वैसे इन कार्यक्रमों के लिए बजट प्रावधान साधारण है।

किसी भी कानून को बनाते समय सब कुछ उसके प्रावधानों के दस्तावेजी स्वरूप पर निर्भर करता है। गरीब, बच्चों, महिलाओं की भलाई के लिए कानून निर्माताओं को इस तथ्य का ध्यान रखना होगा। मातृत्व के लिए मिलने वाले फायदे केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित है। ये लाभ महिलाओं को केवल दो बच्चों के लिए ही मिलते

है। इससे गरीब महिलाएं और बच्चे प्रभावित होते हैं। उन्हें ऐसी स्थिति के लिए दंडित होना पड़ता है, जिसके लिए वे खुद दोषी नहीं है।

एक अन्य महत्वपूर्ण मसला समन्वित बाल विकास योजना (आईसीडीएस) के तहत खाद्यान्न की सप्लाई है। योजना के तहत स्थानीय महिलाओं के समूहों द्वारा तैयार खाद्य भोजन बच्चों को दिया जाता है। सुप्रीम कोर्ट ने इस आशय का आदेश जारी किया है, लेकिन महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और उत्तरप्रदेश में सरकारों द्वारा सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के खिलाफ निजी ठेकेदारों को भोजन सप्लाई के ठेके अवैध रूप से दिए गए हैं। (ध्यान रहे कुख्यात पोन्टी चड्ढा की फर्म का उत्तरप्रदेश में आईसीडीएस के तहत खाद्यान्न सप्लाई पर एकाधिकार था।) खाद्य विधेयक में एक प्रावधान है, जिसमें माइक्रो न्यूट्रिएंट्स (सूक्ष्म पोषक तत्वों) के साथ आहार देने की व्यवस्था की जाएगी। इन प्रावधान की साधारण दिखने वाली भाषा केवल बड़े निजी ठेकेदारों के लिए आईसीडीएस के तहत खाद्यान्न सप्लाई के दरवाजे खोलेगी, क्योंकि कोई भी स्थानीय महिला समूह माइक्रो न्यूट्रिएंट युक्त खाद्य पदार्थों की सप्लाई नहीं कर सकेगा। इस बात के प्रमाण है कि बच्चों को पोषक आहार बने-बनाए खाद्य पदार्थों से नहीं दिया जा सकता, बल्कि स्थानीय पोषक आहार के जरिये देना संभव है। स्थानीय पोषक आहार उनकी कैलोरी, प्रोटीन और माइक्रो न्यूट्रिएंट की जरूरत पूरी कर सकते हैं। इनकी सप्लाई की स्थानीय पारदर्शी व्यवस्था के कारण बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की गुंजाइश सीमित हो जाएगी।

विधेयक की एक अन्य खामी कृषि क्षेत्र की उपेक्षा है। इस शर्मनाक विडम्बना की अनदेखी की जा रही है कि खाद्यान्न असुरक्षा के दायरे में आने वाली सबसे बड़ी आबादी उन लोगों की है, जो लोग अनाज पैदा करते हैं। एसएस स्वामीनाथन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय किसान आयोग ने बहुत समय पहले सभी कृषि उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रस्तावित किया था। यह कृषि पैदावार की लागत के साथ ५० प्रतिशत अतिरिक्त था। इस प्रावधान को खाद्य विधेयक में शामिल करके खाद्यान्न उत्पादन के साथ किसानों की आय सुनिश्चित करने को कानूनी रूप दिया जा सकेगा।

कुपोषण का संबंध गंदगी, अशुद्ध पेयजल, खुलेआम शौच और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी से भी है। इन्हें भी बाद में कानूनी गारंटी का विषय बनाया जा सकता है। लेकिन संसद को जब भी खाद्य विधेयक पारित करने का समय मिले, उम्मीद है कि वह सबसे गरीब और भूखे लोगों, कुपोषित बच्चों, स्कूल जाने से वंचित बच्चों, बेसहारा लोगों, वृद्धों और असहाय लोगों को खाद्यान्न गारंटी सुनिश्चित करने के प्रावधान करेगी। अगर सदियों से चली आ रही भुखमरी समाप्त होती है तो भारत की संसद एक नए इतिहास की रचना करेगी।

— हर्षमंदर, डायरेक्टर सेन्टर फॉर इक्विटी स्टडीज

## नशा करने से क्या होता है ?

नशा न करना मानलो कहना प्यारे भाई,
वरना होगी बड़ी खराबी,
नशा में डर है, नशा जहर है ,
जीते जी मर जाना, होगी बड़ी खराबी .... ॥1॥

शराब न पीना भैया, पागल फिरोगे तुम,
बाजार में, भूखे रहेंगे बच्चे, बीवी
रहेगी इंतजार में, बिकेगा गहना,
फिर कहना दर-दर ठोकर खाना,
होगी बड़ी खराबी .... ॥2॥

बीड़ी न पीना भैया, जलेगा कलेजा,
बातों बात में, आंखों में होगी असर,
नींद न होगी रातो रात में,
भरी जवानी चौपट होगी, हजम न
होगा खाना, होगी बड़ी खराबी .... ॥3॥

तम्बाकू न खाना भैया, काला पड़ेगा गोरे गाल में,
दांतों में होगा कैंसर, लाली चढ़ेगी तेरी आंख में,
शर्म लगेगी बात न होगी, मुश्किल
होगा जीना, होगी बड़ी खराबी .... ॥4॥

- अजीत भोर, रायपुर

पुण्य स्मरण

# छत्तीसगढ़ के भामाशाह-तुलाराम परगनिहा

## २६ जून प्राकट्य दिवस पर

दानवीर श्री तुलाराम परगनिहा द्वारा दिनांक २६-६-१९२६ को स्त्री शिक्षा, संस्कृत तथा वैदिक शिक्षा के प्रसारण हेतु छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसे अपना सर्वस्व दान कर दिया था।

तुलाराम परगनिहा के पूर्वज केशवराम खांडकपूर सर्वप्रथम सेवार-कड़ार (बिलासपुर) में आकर बस गये। जलस्रोत के अभाव के कारण वे वहां अधिक दिनों तक निवास नहीं कर सके और अपने परिवार के साथ दुर्ग जिला की ओर प्रस्थान कर गये। उनकी एक शाखा धमधा राज के सीमावर्ती गाँव तारालीम (विकास खंड बेरला) में आकर निवास करने लगा। ये कृषि कार्य में दक्ष थे। १८६३ ई. के भयंकर अकाल के समय नगहा खांड़कपूर ने अन्न-धन वितरण कर परगना के लोगों को अकाल मृत्यु से बचाया था। इसलिए धमधा के तत्कालीन राजा भवानी सिंह ने उनके उदार सेवा भाव के कारण "परगनिहा" की उपाधि से नवाजा था। तब इसका वंश परगनिहा उपजाति के नाम से जाने जाना लगा।

इस संदर्भ में अवगत हो कि केशवराम खांडकपूर के वंश में तुलाराम जी परगनिहा आठवीं पीढ़ी संतान थे। सन् १८६३ में राय साहेब पीताम्बर सिंह पगरनिहा के परिवार में ग्राम भिंभौरी, जिला दुर्ग में इनका जन्म हुआ। अपने पिता की चार संतानों में इनका क्रम दूसरा था। परगनिहा परिवार मनवा कूर्मि के नाम से जाना जाता है। आज इनका वंश दुर्ग एवं रायपुर जिले में विस्तृत है। तुलाराम परगनिहा की प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर में हुई। बचपन से वे मेधावी छात्र रहे। परिवार की धार्मिक पृष्ठ भूमि के कारण इन्हें आगे अध्ययन के लिये धर्म नगरी इलाहाबाद भेजा गया। जहां से इन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त किया और छत्तीसगढ़ का प्रथम स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया। तुलाराम परगनिहा ने शासकीय सेवा करने का निश्चय किया। सन् १९०५ (४२ वर्ष की उम्र) में वे तहसीलदार के पद पर सागर में पदस्थ हुए। अपनी शिक्षा व शासकीय सेवा के दौरान अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में आये और सेवाभावी संस्थाओं से निकट का संबंध बनाये रखा। इस समय हमारे देश में धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन अपना प्रभाव स्थापित करने लगा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और पंजाब में महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनैतिक शक्ति बन गया था। उसकी एक शाखा सीपी (मध्यप्रदेश) एवं बरार के नाम से नागपुर में स्थापित हो गई। दुर्ग के प्रसिद्ध मालगुजार एवं वकील घनश्यामसिंह गुप्त को इस प्रतिनिधि सभा का प्रधान नियुक्त किया गया। तुलाराम ने इन संस्थाओं के प्रमुखों से सतत् संपर्क बनाये रखा और संस्था के कार्यों से प्रभावित होते हुये स्त्री शिक्षा के लिए सर्वस्व दान कर दिये।

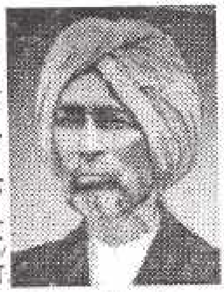

सोनाखान की जमींदारी को ब्रिटिश राज्य सम्मिलित करने के पश्चात् गोल्ड माइनिंग कंपनी ने खरीद लिया था, परन्तु व्यवसायिक दृष्टि से यह उनके लिए हानिकारक साबित हुई। इसलिए उन्होंने इसे बेचने का निर्णय लिया। सन् १९२० ई. में इनके पिता राय साहेब पीताम्बर सिंह परगनिहा ने इस कंपनी के पार्टनर जेम्स हंडरसन से कलकत्ता जाकर भेंट की। वीशब कॉटन स्कूल हावड़ा के छात्रावास में सोनाखान जमींदारी का सौदा निश्चित हुआ और उन्होंने इस जमींदारी के २२ गांव १८ हजार रुपये में खरीद लिये।

तुलाराम परगनिहा की दो पत्नियाँ थीं। महासिर बाई एवं कलावती बाई। इनकी दो संतानें थीं। एक लड़की गुरुदेवी और एक पुत्र मोक्षेन्द्र नाथ हुआ। अल्पायु में ही पुत्र

के कालकवलित (मृत्यु) हो जाने के बाद, वे पुत्र वियोग में बीमार रहने लगी। उन्होने अपनी पुत्री का विवाह कविराज जगदीशचन्द्र बघेल संकरी (बलौदाबाजार) के साथ कर दिया। शासकीय सेवा से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् उनका मन विचलित रहने लगा और अपने परिवार सहित सन् १९२५ ई. में पैतृक गांव छोड़कर कूंरा (धरसींवा) जिला रायपुर आ गये। इनका झुकाव प्रारंभ से ही आर्यसमाज की ओर था और अब उन्होंने निश्चिय किया कि अपनी पूर्ण सम्पत्ति को राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरुप संस्कृत शिक्षा, स्त्री शिक्षा, वैदिक धर्म प्रचार और अनाथ सेवा में समर्पित कर देंगे। कूंरा आने के पश्चात् वे दाऊ घनश्यामसिंह गुप्त के अधिक निकट आये, जो आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. और बरार के प्रधान थे। उन्होने संकल्प लिया कि वे समाज सुधार और छत्तीसगढ़ में स्त्री शिक्षा प्रचार करने अपनी सारी सम्पत्ति आर्यसमाज को दान कर देंगे। इस आशय का उन्होंने अंतिम वसीयत कर दिया। अपनी इस अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा लिया और कूंरा ग्राम को ३० हजार रुपये में खरीदा।

तुलाराम परगनिहा समाज के उपेक्षित और पिछड़े वर्ग के उत्थान के साथ-साथ अनाथों के प्रति सहानुभूति रखते थे। छत्तीसगढ़ में स्त्री शिक्षा का विकास करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य था। इसलिए ६३ वर्ष की आयु में उन्होने सोनाखान जमींदारी के चार गांव चनाट, कसौंदी, भुसड़ीपाली, बोदापाली की कुल सम्पत्ति एवं ५५ सौ एकड़ जमीन, ढनढनी का पूरा गाँव, लवन का २५ प्रतिशत, कूंरा की पूरी सम्पत्ति एवं ३५० एकड़ भूमि, इसके अतिरिक्त ढाबा, कुम्ही और बोरिया प्रत्येक की २५ प्रतिशत सम्पत्ति उद्देश्य पूर्ति के लिए आर्यसमाजी संस्था को दिनांक २६ जून १९२६ को दान देकर वसीयत कर दिया। अपनी एकमात्र पुत्री गुरुदेवी के मुरहुठी गांव का सात आना जो उनके हिस्से में था, जीविकोपार्जन के लिए दे दिया। उन्होंने कुल स्थावर एवं जंगम जायजाद का पूरा-पूरा मालिकाना हक श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. एवं बरार को देकर पैतृक निवास भिभौरी की जायजाद को अपनी दोनों पत्नियों के परवरिश के लिये छोड़ दिया। इस तरह प्रथम स्नातक होने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज के संस्थापक बन गये।

छत्तीसगढ़ में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर निःस्वार्थ भाव से छत्तीसगढ़ का विकास चाहा हो। संस्कृत शिक्षा के प्रति उनकी विशेष आस्था था। स्त्री शिक्षा के वे जबरदस्त पक्षधर थे। अनाथ बच्चों के प्रति उनके मन में दया का भाव विद्यमान था। इसलिए अपनी वसीयत में अपनी अंतिम इच्छा इस प्रकार व्यक्त किया - "मेरी यह प्रबव इच्छा है कि मेरी जायदाद किसी व्यक्ति विशेष के उपयोग में न आवे और कोई व्यक्ति विशेष उसका स्वामी नहीं हो, बल्कि मेरी यह प्रेरणा है कि मेरी सम्पूर्ण जायदाद किसी पुण्य कार्य में लग जावे और ऐसी संस्था के स्वामित्व में जावे जो कि सुसंस्कृत विद्या दान, स्त्री शिक्षा, गुरुकुल, अनाथ रक्षा आदि के लिए प्रयत्न करती हुई वैदिक धर्म का प्रचार व विस्तार में लगी रहती है। सब बातों को अच्छी तरह सोंचकर और बहुत विचार के बाद मैंने यह पक्का निश्चय किया है कि मेरी जायजाद मेरे मरने के बाद आर्यसमाजी संस्था को जावे।"

अपनी इच्छा को मूर्तरुप प्रदान करने का दायित्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं जालंधर कन्या महाविद्यालय के संचालकों पर छोड़ दिया कि वे इस जायदाद से छत्तीसगढ़ के किसी स्थान में कोई विद्या दान की संस्था, स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालय जालंधर कन्या विद्यालय के नमूने पर चलावें। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के इस सपूत ने छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की नींव डाली। दिनांक २६ जून १९२६ ई. मिती जेठ सुदी १४, संवत् १९८३ के दिन उनके वसीयत पर हस्ताक्षर हुए। गवाह के रुप में उनके भाई दाऊ उदयराम परगनिहा एवं सोनपैरी वाले हेमनाथ ब्राह्मण मालगुजार के हस्ताक्षर के साथ घनश्यामसिंह गुप्ता दुर्ग ने आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. विदर्भ की ओर से हस्ताक्षर किया। यह वसीयत ३ जुलाई १९२६ को विधिवत पंजीकृत हुआ। इसके कुछ समय बाद ही २५ अगस्त १९२६ को तुलाराम जी परगनिहा का स्वर्गवाश हो गया।

उनकी इच्छा के अनुरुप आर्य प्रतिनिधि सभा ने दुर्ग में दाऊ तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना

की, जो आज कन्या महाविद्यालय के रुप में संचालित है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ग्राम उतई जिला दुर्ग में दानवीर तुलाराम जी परगनिहा की स्मृति में महाविद्यालय संचालित किया जा रहा है।

वर्तमान में लवन, कूरा, ढाबा एवं कुम्ही में लगभग ६०० एकड़ जमीन एवं सभा बाड़ा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आधिपत्य में कृषि कार्य संपादित करते हुए तुलाराम परगनिहा के नाम पर कन्या विद्यालय संचालित कर रही है। दिनांक १ नवंबर २००० को मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण होने के पश्चात्त दिसंबर २००३ से विधिवत छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाकर विगत १३ वर्षों से संस्था सुचारु रुप से संचालित हो रही है। आर्यसमाज संगठन के शिरोमणी संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्कालीन सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा प्रमाण पत्र देते हुए, छत्तीसगढ़ प्रान्त स्थित दानवीर तुलाराम परगनिहा द्वारा प्रदत्त समस्त चल-अचल सम्पत्ति एवं आर्यसमाजों के प्रबंधन का सम्पूर्ण अधिकार छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया है।

इस अवसर पर विश्व कल्याण महायज्ञ प्रवचन, संगीतमय भजनोपदेश का आयोजन विगत पांच वर्षों से किया जा रहा है, जिसमें **"सुरता तुलाराम जी परगनिहा आर्य"** प्रस्तुती दानवीर के परिवार के निकट सम्बधियों का सम्मान एवं ऋषि लंगर का आयोजन आदि शामिल है।

*- दीनानाथ वर्मा, मंत्री*

## ईश्वर विश्वास

भवसागर से पार लगाता है, ईश्वर विश्वास।
ओ भोले मानव तू क्यों चिन्तित ! क्यों हो निराश हताश ॥
यह सुन्दर संसार प्रभु का, वही करता रखवाली,
जिसको जो होती है जरुरत, देता बढ़कर माली।
कण-कण में व्यापक जो सचमुच हरदम रहता पास ॥
दया प्रेम करुणा बिखरा कर होती उसकी अनुभूति,
आतुर व्यग्र रोते मानव को चाहिये सहानुभूति।
भूख की पीड़ा वह समझे रखता जो उपवास ॥
जहर हलाहल पीने वाले को नहीं मिलती मुक्ति,
किया कर्म पीछा ना छोड़े कर ले जितनी युक्ति।
उसकी आज्ञा का कर पालन सुख गोद में करो निवास ॥
औरों को ज्यादा मिलना और अपना कम जब दीखे,
अपने से नीचे की सोचो देखो ! सुखी क्या तेरे सरीखे।
आह भरो मत खुश हो जाओ, फिर कैसा उच्छवास ॥
मन कर्म वचन से कभी किसी की नहीं बुराई चाहो,
अन्तर्मन में ही बैठा वह बार-बार दुहराओ।
दृढ़तापूर्ण भरोसा रखो, पूरी होती सभी आस ॥

- सत्यदेव प्रसाद आर्य
'मरुत', नेमदारगंज, (नवादा) ८०५१२१

## मानवता धर्म हमारा

**वसुधैव कुटुम्ब हमारा, मानवता धर्म हमारा।**
हम भेद-भाव और ऊँच-नीच क्या जाने,
हम जाति-पाँति के झगड़ों को क्या जाने।
हम सकल विश्व को अपना ही घर मानें,
सबका सुख-दुख अपना ही करके जाने ॥
**ये है आदर्श हमारा, मानवता धर्म हमारा ॥**
ये मन्दिर-मस्जिद, गुरुद्वारे सब मेरे,
ये सूरज चन्द्र सितारे सब हैं मेरे।
ये सरिता-सागर पर्वत पादप मेरे,
ये पंचतत्व के पावन प्राणी मेरे ॥
**सबसे अनुराग हमारा, मानवता धर्म हमारा ॥**
हम प्रेम-प्रीति में पगे सगे हैं ऐसे,
सागर में बिखरे पड़े रत्न हों जैसे।
मानवता के रत्नों को हम एक सूत्र में बांधे,
सब प्रेम-भाव से मिलकर अपनी पूरी करें मुरादें।
**ये हो संकल्प हमारा, मानवता धर्म हमारा ॥**

*- डॉ. राजकुमार शास्त्री, मरोदा सेक्टर, भिलाई*

# देशभक्तों के सरताज : पं. रामप्रसाद बिस्मिल

**मधुर स्मृति**

**जन्म : ११ जून १८९७**

रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान क्रान्तिकारी थे जिन्होने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनका जन्म ११ जून सन् १८९७ को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर शहर में हुआ था। उनके पिताश्री मुरलीधर, शाहजहाँपुर नगरपालिका में काम करते थे। १९ दिसम्बर सन् १९२७ को बेरहम ब्रिटिश सरकार ने गोरखपुर जेल में फांसी पर लटकाकर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी।

रामप्रसाद बिस्मिल के दादाजी नारायणलाल का पैतृक गांव बरबई तत्कालीन ग्वालियर राज्य में चम्बल नदी के बीहड़ों में बसे तत्कालीन तोमरधार क्षेत्र किन्तु वर्तमान मुरैनाजिले में आज भी है। बरबई ग्रामवासी बड़े ही उद्दण्ड प्रवृति के व्यक्ति थे जो आये दिन अंग्रेजों व अंग्रेजी आधिपत्य वाले ग्राम वासियों को तंग करते थे। पारिवारिक कलह के कारण नारायणलाल ने अपनी पत्नी विचित्रादेवी व दोनों पुत्रों मुरलधर एवं कल्याणमल सहित अपना पैतृक गांव छोड़ दिया। उनके गांव छोड़ने के बाद बरबाई में केवल उनके दो भाई अमानसिंह व समान सिंह ही रह गये। उनके वंशज आज भी उसी गांव में रहते हैं। केवल इतना परिवर्तन हुआ है कि बरबई में रामप्रसाद बिस्मिल की एक भव्य प्रतिमा स्थापित कर दी गयी है।

काफी भटकने के पश्चात् यह परिवार शाहजहाँपुर आ गया। शाहजहाँपुर में मुन्नूगूंज के फाटक के पास स्थित अतार की दुकान पर मात्र तीन रुपये मासिक में नारायणलाल ने नौकरी करना शुरु करदिया। भरे-पूरे परिवार का गुजारा न होता था। मोटे अनाज, बाजरा, ज्वार, सामा, ककुनी को राँध (पका) कर खाने पर भी काम न चलता था। फिर बथुआ या ऐसा ही कोई साग आदि आटे में मिलाकर भूख शान्त करने का प्रयास किया गया। दोनों बच्चों को रोटी बनाकर दी जाती किन्तु पति-पत्नी को आधे भूखे पेट ही गुजारा करना होता। ऊपर से कपड़े-लत्ते और मकान किराये की विकट समस्या तो थी ही।

बिस्मिल की दादीजी विचित्रा देवी ने अपने पति का हाथ बटाने के लिये मजदूरी करने का विचार किया किन्तु अपरिचित महिला को कोई भी आसानी से अपने घर में काम पर न रखता था। आखिर उन्होने अनाज पीसने का कार्य शुरु कर दिया। इस काम में उनको तीन-चार घण्टे अनाज पीसने के पश्चात् एक या डेढ़ पैसा ही मिल पाता था। यह सिलसिला लगभग दो-तीन वर्ष तक चलता रहा। दादीजी बड़ी स्वाभिमानी प्रकृति की महिला थीं, अतः उन्होने हिम्मत न हारी। उनको पक्का विश्वास था कि एक न एक दिन अच्छे दिन अवश्य आयेंगे।

समय बदला। शहर के निवासी शनैः शनैः परिचित हो गये। नारायणलाल थे तो तोमर जाति के क्षत्रिय किन्तु उनके आचार-विचार, सत्यनिष्ठा व धार्मिक प्रवृत्ति से स्थानीय लोग प्रायः उन्हें पण्डितजी ही कहकर सम्बोधित करते थे। इससे उन्हें एक लाभ यह भी होता था कि प्रत्येक तीज त्योहार पर दान-दक्षिणा व भोजन आदि घर में आ जाया करता। इसी बीच नारायणलाल को स्थानीय निवासियों की सहायता से एक पाठशाला में सात रुपये मासिक पर नौकरी मिल गई। कुछ समय पश्चात् उन्होने यह नौकरी भी छोड़ दी और रेजगारी (इकन्नी-दुअन्नी, चवन्नी के सिक्के) बेचने का कारोबार शुरु कर दिया जिससे उन्हें प्रतिदिन पाँच-सात आने की आय होने लगी। अब तो बुरे दिनों की काली छाया भी छटने लगी। नारायणलाल ने रहने के लिये एक मकान भी शहर के खिरनीबाग मोहल्ले में खरीद लिया और बड़े बेटे मुरलीधर का विवाह अपने ससुराल वालों के परिवार की एक सुशील कन्या मूलमती

से करके उसे इस घर में ले आये ।घर में बहू के चरण पड़ते ही बेटे का भी भाग्य बदला और मुरलीधर को शाहजहाँपुर नगर निगम में १५ रुपये मासिक वेतन पर नौकरी मिल गई किन्तु उन्हें यह नौकरी रूचि । अतः उन्होने त्यागपत्र देकर कचहरी में स्टाम्प पेपर बेचने क काम शुरु कर दिया । इस व्यवसाय में उन्होने अच्छा खासा धन कमाया । तीन बैलगाड़ियाँ किराये पर चलने लगी व ब्याज पर रुपये उधार देने का काम भी करने लगे । ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत १९५४ (वि.) को दोपहर ११ बजकर ११ मिनट पर रामप्रसाद का जन्म हुआ । उस दिन अंग्रेजी तारीख ११ जून १८९७ थी। लगभग सात वर्ष की अवस्था से रामप्रसाद को हिन्दी व उर्दू का अक्षर ज्ञान करवाया जाने लगा । मुरलीधर के कुल ९ संतानें हुई जिनमें पांच पुत्रियाँ एवं चार पुत्र थे । रामप्रसाद उनकी दूसरी संतान थे । उनसे पूर्व एक पुत्र पैदा होते ही मर चुका था । आगे चलकर दो पुत्रियों एवं दो पुत्रों का भी देहान्त हो गया ।

बाल्यकाल से ही रामप्रसाद की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा । जहां कहीं वह गलत अक्षर लिखता उनकी खूब पिटाई की जाती लेकिन उसमें चंचलता व उद्दण्डता कम न थी । मौका पाते ही पास के बगीचे में घुसकर फल आदि तोड़ लेता जिसकी उसकी कसकर पिटाई भी हुआ करती लेकिन वह आसानी से बाज न आता । शायद यही प्राकृतिक गुण रामप्रसाद को एक क्रान्तिकारी बना पाये अर्थात् वह पुराने विचारों में जन्म से ही पक्का था ।

लगभग १४ वर्ष की आयु में रामप्रसाद को अपने पिता की सन्दूकची से रुपये चुराने की लत पड़ गई । चुराये गये रुपयों से उसने उपन्यास आदि खरीदकर पढ़ना प्रारम्भ कर दिया एवं सिगरेट पीने व भांग चढ़ाने की आदत भी पड़ गई थी । कुल मिलाकर रुपये चोरी का सिलसिला चलता रहा और रामप्रसाद अब उर्दू के प्रेमरस से परिपूर्ण उपन्यासों व गजलों की पुस्तकें पढ़ने का आदी हो गया था । संयोग से एक दिन भांग के नशे में होने के कारण रामप्रसाद चोरी करते हुए पकड़े गये । सारा भाण्डा फूट गया । खूब पिटाई हुई । उपन्यास व अन्य किताबें फाड़ डाली गई लेकिन रुपये चुराने की यह आदत न छूट सकी । हाँ, आगे चलकर थोड़ी समझ आने पर ही इस अभिशाप से मुक्त हो गये ।

रामप्रसाद ने उर्दू मिडिल की परीक्षा में उत्तीर्ण न होने पर अंग्रेजी पढ़ना प्रारम्भ किया । साथ ही पड़ोस के एक पुजारी ने रामप्रसाद को पूजा-पाठ की विधि का ज्ञान करवा दिया । पुजारी एक सुलझे हुए विद्वान व्यक्ति थे जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव रामप्रसाद के जीवन पर दिखाई देने लगा । पुजारी के उपदेशों के कारण रामप्रसाद पूजा-पाठ के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करने लगा । पुजारी की देखा-देखी उसने व्यायाम भी प्रारम्भ कर दिया। पूर्व की जितनी भी कुभावनाएँ एवं बुरी आदतें मन में थीं वे छूट गई। मात्र सिगरेट की लत रह गई थी जो कुछ दिनों पश्चात् उसके एक सहपाठी सुशीलचन्द्र सेन के आग्रह पर जाती रही । अब तो रामप्रसाद का पढ़ाई में भी मन लगने लगा और वह बहुत शीघ्र ही अंग्रेजी के पांचवे दर्जे में आ गया।

रामप्रसाद में अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ । शरीर सुन्दर व बलिष्ठ हो गया था । नियमित पूजा-पाठ में समय व्यतीत होने लगा था । तभी वह मन्दिर में आने वाले मुंशी इन्द्रजीत के सम्पर्क में आया जिन्होंने रामप्रसाद को आर्यसमाज के सम्बन्ध में बताया **'सत्यार्थ प्रकाश'** पढ़ने का विशेष आग्रह किया । **'सत्यार्थ प्रकाश'** के गंभीर अध्ययन से रामप्रसाद के जीवन पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा । बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित सुप्रसिद्ध गीत वन्दे मातरम् की लोकप्रियता के बाद भारतवर्ष के महान क्रांतिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल की गजल सरफरोशी की तमन्ना ही वह अमर रचना है जिसे गाते हुए कितने ही देशभक्त फाँसी के तख्ते पर झूल गये ।

**सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,**
**देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है ?**
**वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्माँ !**
**हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ?**

***सौजन्य - ऋषि कुमार आर्य, रायगढ़***

**अकेला खाने वाला पापी**
**केवलाघो भवति केवलादी ।**

# वीरता की देवी रानी लक्ष्मी बाई

१८ जून बलिदान दिवस

– डॉ. अशोक आर्य

भारत के स्वाधीनता संग्राम में देश की वीरांगनाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया कि अबला कोमलांगी, रमणी ही नहीं वरण समय आने पर वह सबला, वज्रांगी व रणचण्डी का रूप धारण करने की शक्ति भी रखती है। इतना ही नहीं वह अपने नाम के अर्थ का विपर्यय करने में भी पूर्णतया सक्षम हैं। यह सब उनके बाल्यकाल से ही आरम्भ हो जाता है। जब महारानी लक्ष्मीबाई अभी मनुबाई ही थी तभी उसने बाल सुलभ क्रीड़ाओं में दुर्ग घेरना, चक्रव्यूह तोड़ना, बर्छी चलाना आदि के रुप में खेलें खेली। इन्हीं से ही उसका भावी जीवन प्रतिध्वनित हो गया था। विवाह के पश्चात् जब पति की मृत्यु होने पर अंग्रेज की कम्पनी सरकार ने उसकी एक न सुनी तथा झांसी की बागडोर अपने हाथ में लेने की घोषणा कर दी तो लक्ष्मीबाई ने चण्डी का रूप धारण करते हुए पुरुष वेश में समरांगण में जा डटी।

उसमें मोर्चा बन्दी की अद्‌भुत कला थी। तभी वह अंग्रेजों पर निरन्तर विजय पा रही थी तथा गोरे एक महिला से पराजित होकर मुंह छिपाते फिरते थे। १८ जून १८५८ को लक्ष्मीबाई ने बड़ी सरलता से ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। यहां वह चारों ओर से घिरी हुई थी तो भी प्रातः उठकर स्नान ध्यान करना वह न भूलती थी। यहां भी प्रातः उसने यह सब नियम पूरे किये तथा वीरांगना स्वरूप अपना श्रृंगार किया केसरिया बाना पहिन शस्त्र उठाकर तथा शत्रु संहार के लिए साथियों सहित मैदान में जा डटीं। जब उसने पुत्र दामोदर राव को रामचन्द्रराव की पीठ पर बांधा तो सभी समझ गए कि आज वह अपना रणचण्डी का रूप दिखाने वाली है। कुछ ही क्षणों में तोपखाना आग उगलने लगा, अंग्रेजी सेना के साथ ही साथ उसका तोपखाना भी तहस-नहस होने लगा। जिस ग्वालियर की सेना की सहायता के लिए रानी ने जुही के माध्यम से कुमुक भेजी, उसी सेना ने ही विश्वासघात किया। रानी ने धैर्य से काम लिया। वह अंग्रेजी सेना को गाजर, मूली की तरह काटने लगी। गोरे सेना भागने को ही थे कि उन्हें पीछे से सहायता के लिए और सेना आ गई। रानी की पैदल सेना ने भी गोरों से भिड़ कर महाप्रलय का दृश्य बना दिया। इसी मध्य रानी लड़ते-लड़ते रानी अकेली रह गई तथा उसकी सहेली मुन्दरा भी बुरी तरह से घायल हो गई। रानी दोनों हाथों से बिजली की गति से तलवार चलाते हुए मार काट मचा रही थी। वह भी बुरी तरह से घायल हो चुकी थी। रानी के साथी भी काल बनकर परकीयों से जूझ रहे थे।

रानी की अन्तिम अवस्था को निकट देख गुलमुहम्मद ने उन्हें बाबा गंगादास की कुटिया तक पहुंचाया। यहां पहुंचने तक रानी की अवस्था बहुत बिगड़ चुकी थी। मुन्दरा तो ईश चरणों में जा चुकी थी। महारानी ने भी एक बार आंखे खोंली और फिर सदा के लिए प्रभु चरणों में लीन हो गई। इस प्रकार जो ज्योति २१ अक्टूबर १८३५ में प्रज्वलित हुई थी, वह मात्र २३ वर्ष में इतनी आभा बिखेर कर सदा के लिए अस्त हो गई, किन्तु इतिहास में उनके शौर्य के चर्चे सदा होते रहेंगे।

*पता : मण्डी डबवाली, आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, १२५१०४, हरियाणा*

२३ जुलाई जयंती

# भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक व समाज सुधारक - बालगंगाधर तिलक

पुण्य स्मरण

- अनिल आर्य

तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ को ब्रिटिश भारत में वर्तमान महाराष्ट्र स्थित रत्नागिरी जिले के एक गांव चिखली में हुआ था। ये आधुनिक कालेज शिक्षा पाने वाली पहली भारतीय पीढ़ी में थे। इन्होंने कुछ समय तक स्कूल और कालेजों में गणित पढ़ाया। अंग्रेजी शिक्षा के ये घोर आलोचक थे और मानते थे कि यह भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है। इन्होंने दक्खन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधरे।

जन्म से केशव गंगाधर तिलक, एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतन्त्रता संग्रामी सेनानी थे। ये भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुये, ब्रिटिश औपनिवेशक प्राधिकारी उन्हें "भारतीय अशान्ति के पिता" कहते थे। उन्हें लोकमान्य का आदरणीय शीर्षक भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ है लोगों द्वारा स्वीकृत (उनके नायक के रुप में) इन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है।

तिलक ब्रिटिश राज के दौरान स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे, तथा भारतीय अन्तःकरण में एक प्रबल आमूल परिवर्तनवादी थे। उनका मराठी भाषा में दिया गया नारा **"स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे आणि तो भी मिळवणारच"** (स्वराज्य यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा) बहुत प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कई नेताओं से एक करीबी सन्धि बनाई, जिनमें बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, वो. ओ. चिदम्बरम पिल्लै और मुहम्मद अली जिन्नाह शामिल थे।

तिलक ने मराठी में मराठा दर्पण व केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरु किये जो जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। इन्होंने मांग की कि ब्रिटिश सरकार तुरन्त भारतीयों को पूर्ण स्वराज दे। केसरी में छपने वाले उनके लेखों की वजह से उन्हें कई बार जेल भेजा गया।

तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुये लेकिन जल्द ही वे कांग्रेस के नरमपंथी रवैये के विरुद्ध बोलने लगे। १९०७ में कांग्रेस गरम दल और नरम दल में विभाजित हो गई। गरम दल में तिलक के साथ लाला लाजपतराय और बिपिनचन्द्र पाल शामिल थे। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाने लगा। १९०८ में तिलक ने क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा (अब म्यांमार) स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गये और १९१६ में ऐनी बिसेन्ट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रुल लीग की स्थापना की।

तिलक ने मराठी में मराठा दर्पण व केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरु किये जो जनता में बहुत लोकप्रिय हुए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की।

सन् १९१९ ई. में कांग्रेस की अमृतसर बैठक में हिस्सा लेने के लिये स्वदेश लौटने के समय तक तिलक इतने नरम हो गये थे कि उन्होंने मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के जरिये स्थापित लेजिस्लेटिव कौंसिल के चुनाव के बहिष्कार की गांधी की नीति का विरोध ही नहीं किया। १ अगस्त १९२० ई. को बम्बई में उनकी मृत्यु हो गयी।

**स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूंगा।**

२७ जुलाई जयंती

# मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

## मधुर स्मृति

अब्दुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम अथवा ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (१५ अक्टूबर १९३१-२७ जुलाई २०१५) जिन्हें मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है, भारतीय गणतन्त्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जाने माने वैज्ञानिक और अभियंता (इंजीनियर) के रुप में विख्यात थे। इन्होने मुख्य रुप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रुप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाईल के विकास के प्रयासों में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में मिसाइल मैन के रुप में जाना जाने लगा।

इन्होने १९७४ में भारत द्वारा पहले मूल परमाणु परीक्षण के बाद से दूसरी बार १९९८ में भारत के पोखरान-द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई। कलाम सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी व विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन के साथ २००२ में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पांच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये।

जन्म १५ अक्टूबर १९३१ को धनुषकोड़ी (रामेश्वरम् तमिलनाडु) में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए। पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि *जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीनों शक्तियों को भलीभांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।*

अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने १९५८ में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। १९६२ में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये जहां उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रुप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी ३ के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे जुलाई १९८२ में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया।

अब्दुल कलाम भारत के ग्यारवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन.डी.ए. दल ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। १८जुलाई २००२को संसद के अशोक कक्ष में राष्ट्रपतिपद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री, अटल बिहारी बाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्यकाल २५ जुलाई २००७ को समाप्त हुआ। यूं तो अब्दुल कलाम राजनीतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं थे लेकिन राष्ट्रवादी सोच और राष्ट्रपति

बनने के बाद भारत की कल्याण संबंधी नीतियों के कारण इन्हें कुछ हद तक राजनैतिक दृष्टि से सम्पन्न माना जा सकता है। इन्होंने अपनी पुस्तक इण्डिया २०२० में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। यह भारत को अंतरिक्ष विमान के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनते देखना चाहते थे और इसके लिए इनके पास एक कार्य योजना भी थी। परमाणु हथियारों के क्षेत्र में यह भारत को सुपर पॉवर बनाने की बात सोचते रहते थे। वह विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी तकनीकी विकास चाहते थे।

राष्ट्रपति दायित्व से मुक्ति के बाद कार्यालय छोड़ने के बाद, कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर के मानद फैलो, व एक विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और भारत भर में कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों में सहायक बन गए। मई २०१२ में कलाम ने भारत की युवाओं के लिए एक कार्यक्रम, भ्रष्टाचार को हराने के एक केन्द्रीय विषय के साथ, **"मैं आंदोलन को क्या दे सकता हूँ"** का शुभारंभ किया। उन्होंने यहां तमिल कविता लिखने और वेन्नई नामक दक्षिण भारतीय स्ट्रिंग वाद्य यंत्र को बजाने का भी आनन्द लिया।

निधन : २७ जुलाई २०१५ की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग में रहने योग्य ग्रह पर एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हे जोरदार कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) हुआ और ये बेहोश होकर गिर पड़े। लगभग ६.३० बजे गंभीर हालत में इन्हें बेथानी अस्पताल में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के बाद इनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी गई।

*सौजन्य : अजीत कुमार आर्य*

## "पूजनीय वृक्ष हमारे"

पूजनीय वृक्ष हमारे, शुद्ध वायु कीजिए।
वायु दूषित दूर करके, प्राणवायु दीजिए।।१।।
जरुरी है प्राणवायु देखों, हर जीव-जन्तु के लिए।
रक्षार्थ मानव का कर्त्तव्य यही, तत्पर दिखे हर वृक्ष के लिए।। २।।
एक बचाते हैं जब तलक, सैकड़ों कट जाते हैं तभी।
कैसे पूजन करें हे वृक्षदेव, लज्जित हैं हम सभी।।३।।
अशोक के दर्शन होते नहीं, भला शोक कैसे मिटेगा।
न है वृटवृक्ष, न है सावित्री, सोचो कैसे सौभाग्य बढ़ेगा।।४।।
कमल, केवड़ा, दर्भ, दूर्वा, कुश और आम हमारे पूजनीय हैं।
तुलसी न रही जग में, कैसे कहोगे-तुलसी विवाह वन्दनीय है।।५।।

रचयिता - वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, ४-ई, कैलाश नगर, फाजलिका (पंजाब) १५२१२३

**वैदिक संस्कृति** **सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा।** यजु. ७/१४

*वैदिक संस्कृति संसार की सबसे पहली संस्कृति है और सारे संसार द्वारा वरणीय है। परमात्मा में विश्वास, आत्मा की अमरता में दृढ़ आस्था, पुनर्जन्म को मानना, ब्रह्म, देव, पितृ, अतिथि, बलिवैश्वेदव, पञ्चमहायज्ञों का अनुष्ठान, गौओं का पालन-पोषण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रुप में गुण-कर्म-स्वभावनुसार वर्ण-व्यवस्था, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास के रुप में आश्रम व्यवस्था का परिपालन - ये हैं वैदिक संस्कृति के मूल स्तम्भ, जो सभी के लिए वरणीय है।*

आरोग्य जगत

# होमियोपैथी से मधुमेह (शुगर) का इलाज संभव : डॉ. उत्कर्ष त्रिवेदी

आज के समय में न सिर्फ भारत में अपितु विश्व में डायबिटीज एक बड़ी समस्या होती जा रही है। आम भाषा में इसे शक्कर की बीमारी भी कहते हैं। यह एक गंभीर रोग होता है, जो धीरे-धीरे शरीर के अन्य अंगों को भी क्षतिग्रस्त कर देता है। स्त्रियों और पुरुषों में इसका अनुपात १.२ होता है, अर्थात् १ स्त्री और २ पुरुष। आइए जानते हैं कि डायबिटीज क्या है, क्यों और कैसे होती है ? इसके क्या क्या लक्षण होते हैं और इसके क्या उपचार हैं।

**क्या होती है डायबिटीज ?**

हमारे शरीर में पेन्क्रियाज नाम की एक ग्रंथि होती है, जिसे हिन्दी में अग्नाशय कहते हैं। इस ग्रंथि से कुछ हार्मोन्स का स्राव होता है। इंसुलिन पेन्क्रियाज से स्रावित होने वाला एक महत्वपूर्ण हार्मोन है। इसी प्रकार हमारे भोजन में कार्बोहाइड्रेट एक महत्वपूर्ण तत्व होता है जिससे हमें केलोरी और ऊर्जा प्राप्त होती है। कार्बोहाईड्रेट हमारे शरीर में जाकर ग्लूकोज एक छोटे छोटे कणों में बदल जाता है और इसी ग्लूकोज को इंसुलिन शरीर की प्रत्येक कोशिका तक ले जाता है, जिससे शरीर को प्राप्त ऊर्जा होती है। जब यह इंसुलिन शरीर में बनना बंद हो जाता है या इसकी मात्रा इतनी कम रहती है कि कोशिकाओं तक नहीं पहुंच पाता है तो ग्लूकोज कोशिकाओं में नहीं जा पाता है और रक्त में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ जाती है जिसे डायबिटीज कहते हैं।

**एक स्वस्थ और सामान्य व्यक्ति में ग्लूकोज का स्तर**

एक स्वस्थ और सामान्य व्यक्ति में ग्लूकोज का स्तर भोजन के पूर्व ८०-१२०mg/dl और भोजन के पश्चात १३०-१५० mg/dl होना चाहिए। यदि यह स्तल १५०mg/dl से अधिक हो तो व्यक्ति को डायबिटीक माना जाता है।

**डायबिटीज के कुछ कारण और होते हैं जैसे -** इंसुलिन की कमी, हार्मोन्स में परिवर्तन, तनाव, गलत खान-पान, उम्र, मोटापा, आलस और आरामदायक जीवनशैली, कुपोषण, दवाओं का अत्यधिक सेवन।

**डायबिटीज के प्रकार :-** डायबिटीज मुख्यतः ३ प्रकार की होती है।

**टाइप -१ डायबिटीज :-** इसमें इन्सुलिन नामक हार्मोन शरीर में नहीं बन पाता है जिससे ग्लूकोज शरीर की कोशिकाओं को ऊर्जा नहीं दे पाता है। यह प्रायः किशोरावस्था में होती है।

**टाइप -२ डायबिटीज :-** इसमें इन्सुलिन तो बनता है परन्तु इतनी कम मात्रा में जिसे रक्त ग्लूकोज का स्तर अनियंत्रित हो जाता है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी पाया जाता है। लगभग ९०% लोग टाइप २ डायबिटीज से ही पीड़ित होते हैं।

**गेस्टेसनल डायबिटीज :-** यह गर्भावस्था के दौरान होने वाली डायबिटीज होती है।

**डायबिटीज के लक्षण :-** बार-बार पेशाब होना (रात के समय अधिक), प्यास अधिक लगना, मुंह में सूखापन लगना, भूख अधिक लगना, पूरे शरीर में खुजली होना, वजन कम होते जाना, थकान व कमजोरी लगना, पैर सुन्न होना, कोई घाव या चोट लगने पर देर से ठीक होना, स्त्रियों में माहवारी संबंधित कष्ट होना।

**डायबिटीज का होमियोपैथिक उपचार :-** डाटबिटीज एक गंभीर रोग है। यदि कई सालों तक रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ा रहे तो शरीर के अन्य अंगों को भी नुकसान होने लगता है, लेकिन इसे रोगी अपनी दैनिक दिनचर्या और खान-पान में सुधार करके तथा होम्यिोपैथिक दवाओं द्वारा इसे न सिर्फ कंट्रोल किया जा सकता है, अपितु अन्य अंगों को भी क्षतिग्रस्त होने से बचाया जा सकता है।

**एसिड-फॉस (ACID-PHOS):** रोगी को पेशाब बहुत

मात्रा में आता है और उसमें शर्करा की मात्रा बहुत होती है। रोगी कमजोरी महसूस करता है। हाथ-पैरों में दर्द रहता है, पेशाब दूधिया रंग का होता है, मानसिक और शरीरिक रुप से कमजोर रहता है। यह दवा डायबिटीज इनसेपिडस और डायबिटीज मेलिटस में उपयोगी है।

**आर्स-अल्ब (ARS-ALBUM)** :- मुंह सूखा रहे, बार-बार प्यास लगे, रोगी को मरने का डर लगे, पूरे शरीर में खुजली हो, डायबिटीज वालों का गैंग्रीन होने पर यह दवा उपयोगी है।

**यूरेनियम-नाइट्रेड** (UNANIUM-NITRATE) :- मुंह और त्वचा में सूखापन, अत्यधिक भूख और प्यास लगना, पेशाब बहुत अधिक होना, कुपोषण के कारण होने वाली डायबिटीज होने पर यह दवा उपयोगी है। पूरे शरीर में डायबिटीज के कारण खुजली हो, त्वचा सूखी सी रहे, हर घंटे में पेशाब होने पर यह दवा उपयोगी है।

**नेट्रम-सल्फ** (NATRUM-SULPH) :- रोगी को रात में बार-बार पेशाब हो।

**सीजीजियम-जम्बोलियम** (**Syzygium - Jambolanum**) :- अत्यधिक प्यास, कमजोरी दुर्बलता, पेशाब की स्पेसिफिक-ग्रेविटी बढ़ी हुई, डायबिटीज के कारण होने वाले अल्सर, शरीर के ऊपरी भाग में छोटे-छोटे लाल रंग के दाने होने पर ये दवा दी जा सकती है।

**प्लम्बम-मेट** (PLUMB-MET) :- तेजी से वजन कम हो, कमजोरी लगे, याददाश्त कमजोर हो जाए, पैरों में पैरालिसिस हो, कब्ज, लगातार उल्टियां होती हैं।

**अर्जेटम-नाइट्रिकम** (AGRENTUM-NITRICUM) :- बहुमूत्र के रोगी को मीठा खाने की बहुत इच्छा हो, जी मचलाना, उल्टी हो जाना, डिप्रेशन रहना, बहुत ज्यादा पेशाब होना जिसमें शर्करा की मात्रा बहुत हो तो यह दवा उपयोगी है।

कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गए हैं व अन्य कई रोगियों का इलाज चल रहा है।

***नोट :- होम्योपैथी में रोग के कारण को दूर करके रोगी को ठीक किया जाता है। प्रत्येक रोगी की दवा उसकी शारीरिक और मानसिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः बिना चिकित्सकीय परामर्श यहां दी हुई किसी भी दवा का उपयोग न करें।***

***पता :- डॉ. उत्कर्ष त्रिवेदी, होमियोपैथिक चिकित्सक, त्रिवेदी होम्योपैथिक क्लीनिक, लिली चौक, पुरानी बस्ती, बरई मंदिर रोड, रायपुर (छ.ग.)***

# आर्यसमाज के इतिहास में पहली बार एक अभिनव प्रयास

**नई दिल्ली**। गत दिनों लॉकडाऊन पीरिएड के अंतर्गत कोरोना काल में देश की राजधानी दिल्ली निकलने वाली अध्यात्म पथ पत्रिका के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री वैदिक धर्म के प्रचारार्थ नित-नई योजनाओं का प्रकल्पों का विस्तार करते रहते हैं। इसी श्रृंखला में उनके सत्प्रयासों से स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी की स्मृति में आर्यसमाज के इतिहास में पहली बार ऑनलाइन मंत्रपाठ, भजन प्रतियोगिता एवं महर्षि दयानन्द प्रेरक प्रसंग प्रतियोगिता का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें देश-विदेश से हजारों की संख्या में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को धन राशि और प्रमाण पत्र दिया गया। पुरस्कार राशि पेटियम द्वारा भेजी गई। बाकी सभी बच्चों को प्रमाण पत्र व्हाट्सप पर भेज दिये गये। प्रतियोगिता के निर्णायक आचार्य विजय भूषण जी एवं सहसंयोजक श्रीमती कविता आर्या ने कहा कि इस प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने बहुत उत्साह से भाग लिया। सभी ने अच्छे से तैयारी की थी और बच्चे बहुत सुंदर वेशभूषा में तैयार हो आए और उनका अभिभावक उत्साहित लग रहे थे। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि पूर्व मेट्रोपोलिटिन मजिस्ट्रेट श्री ओम सपरा जी ने कार्यक्रम को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नया इतिहास रचने वाला निरुपित किया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने सभी का आभार प्रकट करते हुए, कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में वैदिक विचार उत्पन्न कर उन्हें देश व समाज के प्रति सच्चे उत्तरदायी बनाना है।

समाचार प्रवाह

# गलवान घाटी में शहीद हुए जवानों को दी आर्य जगत ने श्रद्धाञ्जलि

कोटा। दिनांक १९ जून २० को लद्दाख सीमा पर स्थित गलवान घाटी में चीनी सैनिकों के साथ हुई झड़प में शहीद हुए सैनिकों को आर्यजगत ने यज्ञ कर श्रद्धाञ्जलि दी। आर्यसमाज कोटा द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्डा के निर्देशन में कोटा के आर्यजनों द्वारा महावीर नगर तृतीय स्थित एक पार्क में श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया। सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए श्रद्धाञ्जलि सभा में आर्यसमाज महावीर नगर के प्रधान आरसी आर्य के सान्निध्य में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए यज्ञ किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान - सुरेशचंद्र आर्य, मंत्री-प्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य, महामंत्री विनय आर्य तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान-विजय सिंह भाटी, मंत्री-देवेन्द्र शास्त्री ने गलवान घाटी सीमा पर शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि सीमा पर हमारी सेना चीन को कड़ा जवाब देगी। आर्यसमाज के नेताओं भारत सरकार से मांग की है कि चाइनीज सामान के आयात पर तुरंत प्रतिबंध लगाया जाए। आर्य नेताओं ने कहा कि स्वदेशी सामान अपनाने से ही भारत की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी तथा नये उद्योग लगने से रोजगार के अवसर बढ़ेगे। राजस्थान प्रदेश के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्डा ने कहा कि कोटा नगर के आर्यजनों द्वारा विभिन्न स्थानों पर सोशल डिस्टेसिंग का पालन करते हुए विभिन्न स्थानों पर यज्ञ करके शहीद सैनिकों को श्रद्धाञ्जलि दी गई। इस अवसर पर महावीर नगर के आर्यजनों द्वारा शहीदों के चित्र लगे बैनर लेकर महावीर नगर के बाजारों में, गलियों में रैली निकाली, इस अवसर पर लोगों ने पुष्प वर्षा कर के शहीदों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

*संवाददाता - अर्जुनदेव चड्डा*

# महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के बोर्ड परीक्षा परिणाम

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के बच्चों ने इस बार १२वीं एवं १०वीं की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। विद्यालय में इस वर्ष कक्षा १२वीं में ८९.०४% एवं कक्षा १०वीं में ७७.६४% विद्यार्थी सफल रहे। कक्षा १२वीं के जीत वर्मा ८४.२% अंक प्राप्त कर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त की। वहीं प्रीति साहू ने ८१.४% अंकों के साथ द्वितीय स्थान पर तथा कु. चेतना साहू ८०.४०% अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रही। कक्षा १०वीं (हिन्दी माध्यम) में विद्यालय की **कु. ट्विंकल साव ने गणित में १०० में १०० अंक लाकर ९५.१%** अंकों के साथ प्रथम स्थान एवं शैफाली यादव ने ८७.८% प्रतिशत अंकों के साथ दूसरा स्थान तथा आयुष राजपूत ने ८७.१६% अंकों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार कक्षा १०वीं (अंग्रेजी माध्यम) में विद्यालय के मुकेश पवार ने ८४.१६% अंकों के साथ प्रथम एवं अतुल मिश्रा ने ७७.६६% अंकों के साथ दूसरा स्थान तथा लक्की देवांगन ने ७६.८३% अंकों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। हमारे विद्यालय के कक्षा १२वीं के छात्र/छात्राओं में २६ प्रथम श्रेणी, ३७ द्वितीय श्रेणी, २ तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इसी प्रकार कक्षा १०वीं में ३० प्रथम श्रेणी, २७ द्वितीय श्रेणी, २ तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।

विद्यालय के समस्त उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अग्निदूत परिवार एवं विद्यालय परिवार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई देता है।

*संवाददाता : विनोद सिंह,*
*प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा.वि.टाटीबन्ध रायपुर*

# वैदिक मिशनरी – महात्मा चैतन्य मुनि का महाप्रयाण

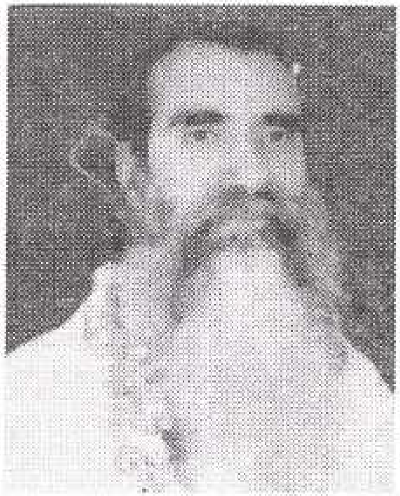

विगत जून २६ तारीख २०२० को सुन्दरनगर मण्डी हिमाचल प्रदेश में स्थित आर्यजगत् की महान् विभूति महात्मा चैतन्य मुनि जी का एक संक्षिप्त बीमारी के पश्चात् परलोक प्रयाण हो गया। महात्मा जी अत्यन्त मृदुभाषी व्यवहारकुशल एवं शास्त्रज्ञ मनीषी पुरुष थे। अनेक साहित्यों का सृजन आपने वैदिक सिद्धान्तों के मर्म को प्रतिपादित करते हुए किया है। अनेक संस्थाएँ आपके हाथों जहां संस्थापित हुई वहीं कई संस्थान आपके सतत सहयोग व अध्यवशाय से प्राणवान भी हुए हैं।

आप एक समर्पित मिशनरी प्रचारक थे, पूरे देश के कोने-कोने में ही नहीं अपितु देशान्तर में भी वैदिक धर्मप्रचारार्थ निरन्तर यात्रा तब तक करते रहे जब तक शरीर साथ देता रहा। काफी समय तक उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा में आप अधिकारी के रुप में अपने अमूल्य योगदान दिए हैं। सम्पूर्ण आर्यजगत् की विंशाधिक पत्र-पत्रिकाओं में आप निरन्तर लिखते रहे। "सैद्धान्तिक" स्तम्भ के अन्तर्गत आपने हमारी पत्रिका "अग्निदूत" की भी निरन्तर श्रीवृद्धि की है। प्रभु की व्यवस्था के आगे नतमस्तक होने के अलावा प्राणी मात्र का कोई मार्ग नहीं।

आपके अप्रत्याशित प्रयाण से आर्यजगत की अपूरणीय क्षति हुई है। डी.ए.वी. संस्थान का ऐसा कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम न था जिसमें आपकी गरिमामयी उपस्थिति न रहती हो। अग्निदूत परिवार एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य

## अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4031215 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।** अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

॥ ओ३म् ॥

॥ विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ (अ) विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।

# महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय

जी.ई. रोड, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

छ.ग. शासन–शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त (पंजी. क्र. 182057)

संचालित : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

# प्रवेश प्रारम्भ

शिक्षा सत्र : 2020-21

**हिन्दी माध्यम**

कक्षा पहली से दसवीं

कक्षा ग्यारहवीं–बारहवीं

(गणित, जीव–विज्ञान, कामर्स, कला)

**हमारा संकल्प**

शिक्षा के साथ

वैदिक संस्कार

दैनिक संध्या, हवन,

बौद्धिक विकास के साथ

नैतिक विकास

**ENGLISH MEDIUM**

Nursery to XI

(Math., Bio., Commerce)

सम्पर्क : कार्यालय : 0771-2572013, प्राचार्य : 9179509030, सचिव : 9826363578

विद्यालय पहुँच हेतु वाहन सुविधा उपलब्ध

CHH-HIN/2006/17407 जून+जुलाई 2020 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/170/CORR/CH-4/2017-18-19

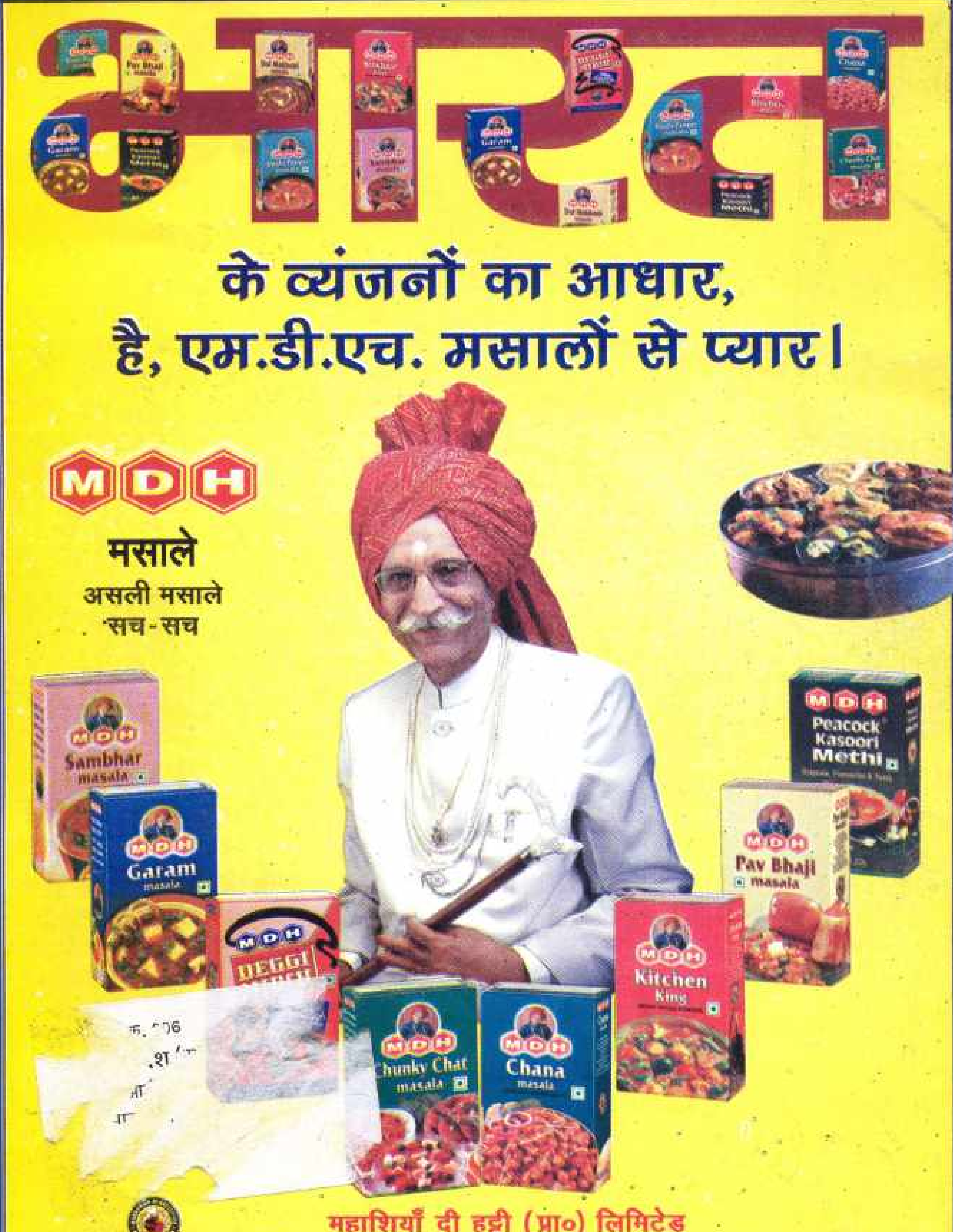


सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१